परवरिश
(Parenting)
आदर्श माँ-बाप और उनके बच्चे

कोई भी परिणाम अन्तिम परिणाम नहीं होता।

—डा. राम बजाज

❖

80/100 मार्क्स की लड़ाई में
अच्छी पुस्तकें अस्त्र होती हैं।

—डा. राम बजाज

❖

जो चीज बच्चे को कष्ट देती
है—वह उसको प्रशिक्षित करती है।

—डा. राम बजाज

सम्बन्धों की डिक्शनरी में माँ–बाप एक ऐसी विभूति हैं जिनको जितना पूजा जाय उतना ही कम है। इनका तिरस्कार बच्चों को दुनिया की खाई में धकेल देगा।

बचपन के जीवन का कड़वा सच है कि बच्चे प्रारम्भिक वर्षों में काल्पनिक दुनिया में ऊँची उड़ान भरते रहते हैं। इस काल्पनिक दुनिया में चारों तरफ बहारें ही बहारें होती हैं, खुशियाँ होती हैं, प्यार होता है, दोस्ती होती है, परन्तु दुनियादारी के खेल में जब बच्चा इनसान बन कर धरातल पर उतरता है तो सारी बहारें, खुशियाँ, प्यार, दोस्ती अलविदा हो जाते हैं।

माँ और पेन्शन Mother & Pension

ट्रेजरी में पेन्शन के लिए लाइन में खड़े करीब पाँच घण्टे की मशक्कत के बाद एक बुजुर्ग महिला का नम्बर आया जो जून के महीने में पसीने से बेहाल थी तथा प्यास बुझाने के लिए पानी की चाह थी। पेन्शन लेकर सड़क पर पैदल ही रवाना हो गयी। इतने में स्कूटर पर बैठा नवयुवक आया और पेन्शन के रुपये अपनी माँ से लेकर चलता बना। बुजुर्ग महिला पानी के लिए पैदल ही आगे बढ़ गई। क्या विडम्बनाभरा सीन था !

भारतीय तहजीब की किताबों में स्त्री और माँ का सम्मान करना कभी हमारी संस्कृति में शामिल था। उनको सम्मान देना हमारी पुरानी तहजीब, मर्यादा, संस्कार का अनिवार्य हिस्सा था, परन्तु सोचने वाली बात यह है कि क्या आज का नवयुवक अहंकार की इतनी अधिक गर्दिश में पहुँच गया है, जहाँ इतनी अधिक असभ्यता और ऊँचाई है कि अपनी माँ की तस्वीर भी बहुत धुंधली दिखने लग गई है या फिर दिखती ही नहीं ? आज के नवयुवक में क्या इतनी भी तहजीब नहीं है कि वह स्वयं अपनी जड़ों से दूर होकर अपने वादों को निभाने में जान-बूझकर भूल कर रहा है ? शायद अब यह आधुनिक समाज की परम्परा बन गई है। माँ की मूरत को धिक्कारने वाले बेटों को समझ लेना चाहिए कि उनको कामयाबी की ऊँचाइयों पर जाना है तो माँ के साथ सम्मानपूर्ण ढंग से पेश आना होगा। माँ से पेन्शन का हिसाब माँगने का मतलब है कि उसमें शर्म और इनसानियत बची ही नहीं। दुनिया में ऐसा कौन-सा बेटा है जो अपनी माँ का कर्ज उतार सके? औलाद अपनी माँ से पैदल चलते सड़क पर पेन्शन का हिसाब ले ले, उससे अच्छा तो औलाद का न होना होगा। सत्य से हम घबराते हैं। बेटे की जिन्दगी की किताब में जो शब्द भावनाओं की स्याही के बगैर लिखे जाते हैं, कालान्तर में वे शब्द, बंजर जमीन पर उगी चट्टान बन जाते हैं। अमृत की मर्यादा तब ही बचती है जब कोई बेटा जहर पीने वाला हो, चारों ओर धुआँ ही धुआँ। कोई तस्वीर साफ नजर नहीं आती। ऐसे पूतों का माँ क्या करे, जहाँ उनकी शक्ल-सूरत देख कर डर जाती है?

बच्चों में ऊँचा उड़ने की ख्वाहिश होनी चाहिए

आजकल के बच्चों में ऐसी क्षमता की आवश्यकता है, जिससे वे उड़ सकें। कुछ नया बनाने या क्रिएट (Create) करने के बारे में सोच सकें। इसके लिए ऐसे वातावरण की जरूरत है जिसके द्वारा बच्चे नई–नई चीजों के बारे में जान सकें, जिससे उनका दिमाग जीवन के प्रथम पाँच वर्ष में ही एक प्रौढ़ के समान बुद्धि विकसित कर सके।

आप खुद सोचिए कि बच्चा Biological Watch के खिलाफ सारी रात जाग कर सुबह इम्तिहान देगा, तो उसको कुछ भी याद नहीं रहेगा। सारा कुछ उलटा–पुलटा हो जावेगा—चाहे उसने पूरे साल जम कर पढ़ाई भी क्यों न की हो। क्या यह सही नहीं है कि जूता अगर छोटा हो तो पैरों को निश्चित रूप से काटेगा और बड़ा हो तो चलने में तकलीफ देगा? सोचिए कि अगर चावलों में पानी कम डाला तो कच्चे रह जायेंगे और ज्यादा डाल दिया तो क्या स्थिति होगी? चावलों की खिचड़ी। बस, यही फर्क सारी रात जाग कर ज्यादा पढ़ने में होता है। एक लीटर के बर्तन (दिमाग) में एक लीटर तेल डालिए, सब–कुछ साधारण ही लगेगा। परन्तु अगर इसी एक लीटर के बर्तन (दिमाग) में 5 लीटर का ज्ञान—शिक्षा डालने की चेष्टा आपके बच्चे की जिन्दगी में सब–कुछ उलटा–पुलटा कर देगी, जिससे अपनी जिन्दगी में वह अनावश्यक रूप से बचपन में ही तनावग्रस्त हो जायेगा। हर कोई बच्चा क्लास में फर्स्ट नहीं आ सकता, इस जगह पहुँचने वाला तो सिर्फ एक ही बच्चा होगा, इस सीढ़ी पर नहीं पहुँचने पर आप और आपके बच्चे तनावग्रस्त नहीं होने चाहिए। अकसर माँ–बाप की ऊँची आकांक्षाएँ बच्चे को तनावग्रस्त कर देती हैं। अगर आपका बच्चा, अच्छा इन्जीनियर या डाक्टर नहीं बन सकता तो कोई बात नहीं, उसे दूसरी तरफ मोड़ दीजिए। माँ–बाप द्वारा अपनी उम्मीदें बदलने का नाम ही अक्लमंदी है। सपनों की कोई कीमत नहीं होती, परन्तु यथार्थ में बदलने की सीमा जरूर होती है। महत्त्वपूर्ण यह नहीं है कि आपका बच्चा कितनी धीमी गति से आगे बढ़ रहा है, बल्कि महत्त्वपूर्ण यह है कि वह आगे बढ़ने से कहीं एक जगह रुक तो नहीं गया है।

माँ–बाप का रिश्ता कितना भी मजबूत क्यों न हो, संवादहीनता के अभाव में दम तोड़ देता है। कहते हैं कि जब हम मुस्कराते हैं तो सारी दुनिया मुस्कराती है परन्तु जब हम रोते हैं, तो अकेले ही रोते हैं। हमारे साथ रोने वाला कोई नहीं होता। यहाँ तक कि जिसके लिए रोते हैं उसे भी फर्क नहीं पड़ता। वह भी

हमें रोने से चुप नहीं कराता, हमारे आँसू तक नहीं पोंछता। आज के समय में अकेले रोने वालों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है।

माँ–बाप को व्यावहारिक गणितज्ञ होना चाहिए। यानी ऐसे माँ–बाप, जो बच्चों की खुशियों में गुणा (Multiplication) कर दें, दुःखों को भाग (Divide) कर दें, भूलों को घटा (Substract) दें और सुनहरे अमीरी के सपनों को जोड़ (Addition) दें। माँ–बाप या कोच बच्चों के लिए आईने जैसा होता है।

यूरोकप 2004—लिस्बन

5 जुलाई, 2004 को यूनान टीम ने पुर्तगाल पर यूरोकप 2004 में (लिस्बन) में 1–0 से जीत दर्ज कर पहली बार यूरोपीय फुटबाल की सरताज बनी। इससे पहले यूनान ने किसी बड़े टूर्नामेन्ट में कभी कोई मैच नहीं जीता था, लेकिन उसने स्ट्राइकर एंजेलस हैरिस्टस के 57वें मिनट में 6 मीटर की दूरी से हेडर द्वारा किए गोल की बदौलत फुटबाल जगत् का यह दूसरा सबसे प्रतिष्ठित खिताब जीत लिया।

मैच खत्म होने पर जर्मन कोच ओटो रेहैगल, स्ट्राइकर एंजेलस हैरिस्टस के पास गए और बोले—मि. एंजेलस हैरिस्टस, मैं अपनी जिन्दगी में इतना गलत कैसे हो सकता था! मैंने आज तक तुम्हें इतना अच्छा खेलते हुए नहीं देखा और न ही तुम पहले कभी ऐसा खेले। तुमने फुटबाल का नया इतिहास रचा है। यह यूनान और मेरे लिए अप्रत्याशित उपलब्धि है। यूरो 2004 के इस सनसनीखेज समापन की उम्मीद किसी ने नहीं की थी। आखिर तुम इतना अच्छा कैसे खेल गए?

स्ट्राइकर एंजेलस हैरिस्टस ने जर्मन कोच ओटो रेहैगल को जवाब दिया—सर, आज पूरा देश मुझे टी.वी. पर लाइव देख रहा था, 56वें मिनिट तक की बराबरी ने मुझे झकझोर दिया। खेल जारी रखते हुए, मैंने जान की बाजी लगा दी, और जब मुझे 57वें मिनिट में बाल मिली तो मेरे हेडर ने मुझे हीरो बना दिया और टीम व देश को जबरदस्त जीत हासिल करवाई।

क्वार्टर फाइनल में फ्राँस को हराने के साथ चैक गणराज्य को

सेमीफाइनल में भी हराने वाली यूनानी टीम का हीरो एंजेलस हैरिस्टस बन गया।

संतुलन Balance

साफ है कि अच्छा कार्य, वह भी देश के लिए; अच्छा अध्ययन, बेहतर परिणाम किसी सीमा में नहीं बंधता। यह कोई पैमाना नहीं होता, जिस पर इसे नापा जा सके। फिर भी यह जरूरी है कि काम के स्थल पर, खेल के स्तर पर और अध्ययन के पड़ाव पर संतुलन अवश्य बना कर रखना चाहिए। जिस जगह हम पढ़ते हैं, काम करते हैं, खेलते हैं, वह भी दुनिया का एक हिस्सा होता है। नए लोगों को रास्ता दिखाने का काम कोच, माँ–बाप या गॉडफादर का ही होता है। आसमान जीत कर लाना नए लोगों की जिम्मेदारी है। यही हमारे समाज का नियम है, और अध्ययन अथवा काम की जगहों पर भी यही नियम बाकायदा लागू होता है।

आधुनिक मार्शल आर्ट्स जगत् में 'ब्रूस ली' का एक विशिष्ट स्थान है, जिस तक पहुँचने का स्वप्न हर मार्शल आर्ट का जानकार देखता है। ब्रूस ली की आक्रामक मुद्राएँ, शरीर के विभिन्न अंगों का शक्तिप्रदर्शन, छठी इन्द्री द्वारा खतरे का पूर्वाभास, शक्तिशाली किक्स का प्रहार, मार्शल आर्ट के लिए एक अबूझ पहेली के समान है।

आदर्श माँ–बाप कैसे बन सकते हैं? अमीरी के नुस्खे कैसे सिखाएँ? How the Parents can be a Role-Models? How the formulas becoming a rich person are taught?

आज के बच्चों की परवरिश करना पहले से कहीं अधिक मुश्किल हो गया है, मगर आदर्श माता–पिता के लिए आज महत्त्वपूर्ण बात यह नहीं है कि बच्चों को डिग्रियाँ, अच्छी संस्थाओं में येन–केन–प्रकारेण से भर्ती करवा कर, दिलवाने का इन्तजाम करवा दिया। बल्कि महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जिन्दगी की अगली सीढ़ी के लिए बुनियाद का आधार कितना सुरक्षित और मजबूत बनाया है। उसको करिश्माई अमीरी के नुस्खे हासिल करने की कामयाबी की नींव में आपको आदर्श माँ–बाप बनना होगा।

अधिकतम लक्ष्य हासिल करने की जंग में हर माँ–बाप का बड़ा योगदान होता है। हर घोड़े (बच्चे) के माथे पर उसकी रफ्तार लिखी होती है—उसकी टाँगों पर लिखा होता है कि वह कितनी दूर जा सकेगा। माता–पिता को पढ़ना आना चाहिए और उस घोड़े का उस हिसाब से इस्तेमाल करना चाहिए। कमजोरियों को खूबियों में बदल कर 80/100 मार्क्स का रास्ता दिखलाना होगा। परिस्थितियों को उसके ऊपर हावी होने देने की बजाय उन पर काबू करना सिखाना होगा। कुछ मंत्रों को अपने सुरों की माला में ऐसे पिरोये जाने की कला सिखानी होगी, जो कम चमकने वाले मोती की पहचान को आसान बना दे। बच्चे के व्यक्तित्व को परखते रहें और उसकी उम्मीदों को ठण्डा मत होने देवें।

नई उमंग, नया जोश/पक्षी और शिकारी

नए परिन्दों को आकर्षित करने के लिए शिकारी ने नई तकनीक का झिलमिल करता जाल बिछाया और उस पर रंगदार अनाज के दाने बिखेर दिए। नए परिन्दों को नई तकनीक में फंसना था और उसमें समृद्ध घोंसलों के चार युवा पक्षी जाल पर उतरे और उलझ गए। चारों आनन्द और मस्ती का आलम भूल कर, स्वतंत्र होने की चिंता करने लगे। परस्पर इशारों के साथ ही निश्चित लक्ष्य का जन्म होते ही संघर्ष–शक्ति का उदय हुआ और चारों पक्षियों ने एक–एक कोना पकड़ा और जाल को आकाश में लेकर उड़ भागे। बचपन में पढ़ी कहानी को सच होते हुए देखा। एक महात्मा आश्रम में बैठा हुआ सब नजारा देख रहा था कि जाल के पीछे भागता हुआ शिकारी वहाँ आ पहुँचा। महात्मा ने शिकारी को रोका और कहा—शिकारी, आज तुम हार गए। एकता में आज भी उतना ही बल है जितना की बीते युगों की पुस्तकों में वर्णन है। इन पक्षियों की शिक्षा, आधुनिक युग के तकनीकी वातावरण में हुई है, उनके माँ–बाप ने निर्णय की कला, समय–प्रबन्धन और नेतृत्व जैसे गुणों का कच्ची उम्र में ही समावेश कर दिया। ये वो पक्षी नहीं हैं—जो थोड़ी देर बाद आपस में झगड़ कर अहंकार और स्वार्थ की भावना से आपस में लड़ कर, तुम्हारे पाँवों में जाल समेत गिर जायेंगे।

शिकारी ने विश्वास के साथ कहा—मैं हारा नहीं हूँ। आज से पहले मेरा विश्वास कभी डगमगाया नहीं, फिर आज भी हमेशा की तरह ये

पक्षी आपस में, अंहकार व आपसी लड़ाई के कारण मेरे कदमों में गिर पड़ेंगे और हमेशा की तरह निश्चित ही गिरेंगे। अभी मैंने उम्मीद का दामन छोड़ा नहीं है।

थोड़े समय के बाद शिकारी और महात्मा ने देखा कि, वे पक्षी एक छोटे पहाड़ की चोटी पर बैठ कर, चारों की सहायता से जाल से पीछा छुड़ा, नई उमंग, नए जोश और नई आशाओं के साथ, फिर आकाश में उड़ने लग गए। शिकारी भौंचक्का हुआ देखता ही रह गया। आखिर वह माथे का पसीना पोंछते हुए महात्मा से बोला—महाराज, गजब हो गया! आज तक ऐसा नहीं हुआ। इनमें अहंकार की भावना क्यों नहीं पैदा हुई? आपस की मित्रता, स्वार्थ में क्यों नहीं तबदील हुई? अपने गौरवगान, स्वार्थसिद्धि और अपना-अपना प्रभुत्व साबित करने की आपस में क्यों नहीं होड़ लगी? 99.9999 फीसदी पक्षियों और इनसानों में तो आज तक यही होता आया और आगे भी ऐसा होता रहेगा। फिर भला आज ऐसा क्यों नहीं हुआ, महात्माजी?

महात्मा ने अपनी आँखों के भीगे कोर धोती की छोर से पोंछे और बोले—शिकारी! युगों-युगों से इनसान अपना व्यक्तिगत वर्चस्व कायम करने के लिए, स्वार्थ और अहंकार की भावनाओं से जो आत्मप्रशंसा की बेड़ियों में जकड़ जाता है, वह पक्षी अन्त में शिकारी के पैरों में जाल सहित गिर जाता है—परन्तु इन नए परिन्दों के माँ-बापों ने इन पक्षियों में एकता में शक्ति, नेतृत्व आदि के गुणों का समावेश कर दिया था। यही वजह खास थी—जो अकसर किसी अन्यों के माँ-बाप ऐसा करने की सोचते ही नहीं।

शिक्षा की पूर्णता जीवन के उद्देश्य को समझने और उसे पूरा कर लेने की योजना (Planning) बना लेने में है। जीवन और अमीरी का रास्ता तय कर पाना सबसे कठिन कार्य होता है। अभ्यास की निरन्तरता भी चाहिए और समय का प्रबन्धन भी। शिक्षा की पूर्णता कोरी शिक्षा ही नहीं, अनुभव के साथ पूर्णता का फार्मूला कहाँ से प्राप्त करें—बस यही उद्देश्य शिक्षा का, बस यही उद्देश्य अनुभव का और बस यही उद्देश्य अमीरी का होना चाहिए।

असल में औसतन 80 साल की जीवनयात्रा बहुत लम्बी होती है। इसको

समझ लेना ही शिक्षा का और बाद में अनुभव का भी बड़ा महत्त्व है। शिक्षा–काल इतना लम्बा होता है जिसमें जीवन का एक चौथाई भाग, 25 वर्ष, शिक्षा में ही निकल जाता है। क्या यह विडम्बना की बात नहीं है? इतना बड़ा समय शिक्षा, और वो भी सामान्य स्कूली और कालेज शिक्षा में निकाल देना कितनी समझदारी होगी, जरा ध्यान देने और सोचने की बात होगी। शिक्षित इनसान वह है जिसमें सही और गलत, अच्छाई और बुराई में भेद करने की क्षमता हो। शिक्षा दो प्रकार की होती है, एक वह, जो जिन्दगी संवारने में सहायक होती है और दूसरी, रोजी–रोटी और अमीरी में। गरीबी पैदाइशी नहीं होती, बल्कि जिन्दगी के गलत निर्णय ही गरीबी में धकेल देते हैं। ज्यादातर मामलों में हम सब भौतिक परिस्थितियों की कब्र में बहुत गहरे और नीचे, बहुत जल्दी दफन हो जाते हैं। जब तक हम तय करते हैं कि हमें क्या करना है, कैसे करना है, हमारी जिन्दगी के महत्त्वपूर्ण साल बरबाद हो चुके होते हैं। अच्छा कारोबार होने के लिए अच्छा इनसान होना पहली शर्त है।

आदर्श माँ–बाप बनने के साधारण, परन्तु बहुत ही उपयोगी संक्षिप्त सुझाव :

(1) बच्चों में करुणा, ईमानदारी, उदारता और खुलेपन का माहौल पैदा करें और इस बारे में रोज अच्छी बातों का उदाहरण देते रहें। जरूरत प्रेरणा देने वाले माँ–बाप की है, बॉस की नहीं।

(2) बच्चों को गरीबी की भाषा नहीं, अमीरी की भी भाषा सिखाएँ।

(3) स्कूल के लिए सुपरकिड नहीं, जिन्दगी में सुपरमैन बनाने की काबिलीयत पैदा करें। फर्स्ट ग्रेड की होड़ नहीं करें।

(4) बच्चों में आत्मबल का विश्वास जाग्रत करें। इसकी कमी बीमार व्यक्तित्व की निशानी है।

(5) बच्चों के दोस्तों और उनके माता–पिता की भी जरूर जानकारी रखें ताकि आप उनकी गतिविधियों से परिचित रह सकें।

(6) बच्चों को मजबूत आधार दें—अधिक धन–दौलत तो वे इस मजबूत आधार से कमा ही लेंगे।

(7) बच्चों को जीवन–भर का उपहार आदर्श माँ–बाप बन कर देवें। आपसे बढ़िया Role-Model उनके लिए कोई दूसरा नहीं हो सकता।

(8) बच्चों को सोता हुआ छोड़ कर काम पर नहीं जावें।

(9) बच्चों को अपने पास रख कर पढ़ाएँ, कहीं बाहर भेज कर नहीं। महत्त्वपूर्ण यह नहीं कि आपका बच्चा कौन–सी नामी–गिरामी स्कूल में शिक्षा प्राप्त करता है, बल्कि महत्त्वपूर्ण यह है कि शिक्षक कितने नामी–गिरामी हैं।

(10) बच्चों को कोई कहानी नहीं, बल्कि कहानी का नायक बनावें।

(11) खेल–खेल में सिखलाएँ और खेल में जीतने की भावना पैदा करें।

(12) बच्चों के साथ ही खाना खाएँ और अनुभवों का हस्तान्तरण करते रहें।

(13) सफल व्यक्तियों की जिन्दगियाँ उन्हें दिखाएँ, सफलता का रास्ता ही नहीं, मंजिल भी दिखलाएँ।

(14) रचनात्मक काम कोई छोटा या बड़ा नहीं होता—करने वाला ही छोटा या बड़ा होता है—सिखलाएँ।

(15) अहंकार नहीं, गर्व करना सिखलाएँ।

(16) फुरसत निकालें और बच्चों पर पूरा समय देवें।

(17) बच्चों की नजर से दुनिया देखने की कोशिश कीजिए, आप खुद–ब–खुद अनुशासित रहने के तरीके जान जायेंगे।

(18) बच्चों को सदैव एक कदम दूसरों से पहले उठाना सिखाएँ परन्तु यह तभी उठा सकते हैं जब आपको मालूम हो जावे कि औरों ने (दूसरों ने) यह कदम कब उठाया है।

(19) बच्चों का गणित उनके हक और हित में कैसे जावे, यह देखना भी एक आदर्श माँ–बाप का ही काम है।

(20) अक्लमन्द माँ–बाप की दलीलें थोथी नहीं हो सकतीं। उनको पता है कि बचपन खेलने के लिए है—किताबें रटने के लिए नहीं।

(21) बच्चा गरीब इसलिए नहीं है कि वह आपके गरीब घर में पैदा हुआ है, बल्कि इसलिए है कि माँ–बाप ने उसको अमीरी के नुस्खे (Formulas) का ज्ञान ही नहीं दिया।

(22) बच्चा कोई गणित का सवाल नहीं है कि उसका एक ही फार्मूले से हल ढूँढ़ते रहें। उसको ठोस आधार का हल देना है तो उसको चरित्र–निर्माण के साथ सचाई व ईमानदारी की भाषा बोलने की योग्यता भी आदर्श माँ–बाप को ही देनी है।

(23) संगीत के सात स्वर प्रकृति और स्वभाव में भिन्न–भिन्न होते हुए भी जिस तरह एक लय में होते हैं, एक तरह का सामंजस्य (Co-ordination) बना कर सुन्दर राग बनाते हैं—बच्चों को भी जिन्दगी और अमीरी के प्रबन्धन में सामंजस्य बनाने की कला सिखलाएँ।

(24) बच्चों में अनावश्यक टोका–टोकी अकसर तानाशाही निर्णय को जन्म देने लगती है और खासतौर पर बार–बार टोकने से वे विद्रोही बन सकते हैं। अतः ज्यादा टोकने से खुद को रोकें। उनको समझाएँ कि आप बड़े जरूर हो रहे हैं लेकिन बड़ों से बड़े कभी नहीं हो सकते। लिहाजा अपने माता–पिता के सोचे हुए फैसलों को ध्यान से सुन कर, आपस में विचार–विमर्श करके ही—अपनी बात रखें। समय रहते लक्ष्य–निर्धारण कर लें।

(25) बच्चों की छोटी–छोटी समस्याओं की उपेक्षा नहीं करें। आपके लिए भले ही ये समस्याएँ महत्त्वहीन हों, लेकिन बच्चे के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होती हैं।

मदद–मदद Help-Help

नदी में कूद कर खुदकुशी करने वाले नौजवान को वहाँ से गुजर रहे एक आदमी ने बचा लिया। जब वह आदमी जाने लगा तो नौजवान ने पुकार कर कहा—मुझे क्यों बचा लिया गया, मुझे मरने देते? आदमी ने वापस मुड़ते हुए, नौजवान की आँखों में उदासी के आँसू देखे और कहा—बेटा, समझ लो, तुम मर चुके हो और तुम्हारा आज के दिन पुनर्जन्म हुआ है। यह जिन्दगी अब तुम्हारी नहीं रही है, तुम इस बात को याद रखना कि तुम्हारी जिन्दगी बचाने के लायक नहीं थी, फिर भी बचा ली गई। वादा करो कि हाईवे पर रोज दुर्घटनाओं के कारण—मदद के लिए चिल्लाने वालों की मदद करोगे। दूसरे इनसान मदद के लिए इसलिए नहीं आते कि पुलिस के कई लफड़ों में फंसना नहीं चाहते—हालाँकि मदद करना तो चाहते हैं। आज से तुम एक नई जिन्दगी की शुरुआत करो और हाईवे पर होने वाली दुर्घटनाओं में घायल इनसानों को तुरन्त मदद देकर जान बचाने का काम शुरू करो।

यह सोचने का समय है। यह सचेत होने का समय है। जब तक जीवन का बड़ा उद्देश्य नहीं बन जाता, जीवन उदास और सूना बन जाता है और आदमी खुदकुशी की सोचने लगता है। कई बार हम उन चीजों की अनदेखी कर देते हैं जिन्हें अनदेखा नहीं करना चाहिए—और कभी-कभी उन चीजों को अनदेखा नहीं करते, जिन्हें अनदेखा करना चाहिए। जब हमारे जीवन के मूल्य ऊँचे और साफ हों तो मदद करना आसान हो जाता है। भले ही दुनिया बदल रही हो, जीवनशैली में भी बदलाव आ गया हो। हर चीज बदल रही है, साथ में जिन्दगी की रफ्तार में भी तेजी आई है। यहाँ तक कि स्वाद ने भी अपना रंग बदला है। इसके बावजूद इनसान और अपने बच्चों को मदद व मदद का तरीका नहीं बदलना चाहिए। बच्चों की शिक्षा और अच्छे अंकों की पूर्णता जीवन के उद्देश्य को समझने और उसे पूरा कर लेने की योजना बना लेने में ही है। जीवन का लक्ष्य तय कर लिया तो किसी को भी नदी में कूदने की जरूरत नहीं पड़ेगी। हालाँकि जीवन का लक्ष्य तय कर पाना सबसे कठिन कार्य होता है। सिर्फ भीगने वाले इनसान नहीं, बरसात में नहाने वाले इनसान ही अपना पूर्ण लक्ष्य निर्धारित कर पाते हैं।

यदि आप गरीबी से छुटकारा पाना चाहते हैं, यदि आप अमीर बनना चाहते हैं, तो सबसे पहले अपने मन में यह सोचने का अभ्यास करिये कि आप गरीब नहीं हैं। अमीर बनना है तो समझो कि आप आधे अमीर तो बन ही गए।

— डा. राम बजाज

माँ-बाप की अहमियत का अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इलेक्ट्रोनिक खिलौनों का मूल्य कम और ऊँची उड़ान पुस्तक का मूल्य अधिक लगता है।

— डा. राम बजाज

आप अपने बच्चे की परवरिश कैसे कर रहे हैं, जाँच कर लें।

माँ-बाप के दिशाहीन लक्ष्य और निर्णय बच्चे के भविष्य का निर्माण नहीं कर सकते। बच्चे की कामयाबी की गणित में एक-एक सवाल बड़ी सूझ-बूझ के

साथ हल करने पड़ते हैं। उनके पालन–पोषण की राह में सारे मोड़, सारे सवाल सीधे नहीं आते। इनका जवाब आप कितना सीधा देते हैं, यही तय करेगा कि आप उनकी परवरिश कैसी कर रहे हैं? **आकलन आप खुद ही करें** —

(1) आपका किशोर बच्चा गलत संगत में फंस गया है—
   (क) सख्ती बरतेंगे।
   (ख) मित्रों के बारे में पूर्ण जानकारी लेंगे।
   (ग) बच्चे को गलत साथियों से बिल्कुल दूरी बनाने का कहेंगे और बतलाएंगे कि ऐसे दोस्त उसके लिए क्या–क्या परेशानी खड़ी कर सकते हैं।

(2) आपके किशोर बच्चे ने परीक्षा की अच्छी–खासी तैयारी की, लेकिन परिणाम अच्छा नहीं रहा—
   (क) आप उसे ताने देंगे।
   (ख) भूल कर, अगले साल की तैयारी में लग जाना चाहिए।
   (ग) बुरे परिणाम के कारणों की जाँच करें। हर विषय में सुधार के लिए वास्तविक जीवन के उदाहरण देकर, पढ़ाने के तरीके अपनाएंगे।

(3) आप अपने बच्चों के साथ भोजन करते समय, पूरे दिन की दिनचर्या के साथ अमीर भाषा का ज्ञान देते हैं—
   (क) आप बच्चों के साथ भोजन ही नहीं करते।
   (ख) कभी–कभार लेकिन दिनचर्या के बारे में चर्चा नहीं।
   (ग) दिन में एक बार खाना साथ में, पूरी दिनचर्या व अमीर भाषा की बातें अवश्य करते हैं।

(4) बच्चे के जीवन का लक्ष्य निर्धारित करने का कौन–सा समय उचित समझते हैं—उसकी रुचि का ध्यान रखते हैं?
   (क) 12वीं कक्षा में प्रवेश के साथ ही।
   (ख) 10वीं कक्षा में प्रवेश के साथ ही।
   (ग) 8वीं कक्षा में प्रवेश के साथ ही—बच्चे के साथ विचार–विमर्श करना शुरू कर देते हैं।

(5) बच्चे की कोचिंग क्लासेज के लिए क्या करेंगे?
   (क) शहर से बाहर अन्य अच्छे कोचिंग सेन्टर में भेजेंगे।

(ख) तुरन्त शहर में ही कोचिंग सेन्टर ज्वाइन करा देंगे।

(ग) अध्ययन हेतु पूर्व–निर्धारित योजना बना कर, अच्छे मार्गदर्शक से विचार–विमर्श कर अध्ययनकार्य में प्रैक्टिकल जवाबों की तैयारी नियमित रूप से शुरू करा देंगे।

(6) आपका बेटा कहता है कि एक दिन वह 'लक्ष्मीनिवास मित्तल' जैसा अमीर बनना चाहेगा—

(क) मूर्खतापूर्ण बातें करना छोड़ने को कहेंगे।

(ख) कहेंगे कि बहुत बड़ा सपना है, परन्तु कठिन है।

(ग) बताएँगे कि अमीर बनने के लिए बड़े सपने, बड़े विचार, बड़ा विश्वास ही बड़ी अमीरी का आकार तय करते हैं। इसके लिए योजना, निर्णय और दृढ़ता में दक्षता जरूर उपयोगी है।

(7) आपके अनुसार बचपन—

(क) सिर्फ पढ़ने के लिए, बड़े बस्तों के किताबी बोझ के साथ।

(ख) अच्छे नम्बरों के लिए रात–दिन मेहनत।

(ग) पढ़ाई के साथ सभी परिपक्वता के गुण व जिम्मेदारियों का एहसास।

(8) जीवन में सफलता के लिए कौन–सा प्रमुख रहस्य आप समझाएँगे?

(क) अच्छी नौकरी।

(ख) भाग्य के साथ अच्छे अवसरों का इंतजार।

(ग) स्वयं का कारोबार। विशेषज्ञों की सेवाएँ लेकर आगे कदम बढ़ाते रहना।

(9) कार्यक्षमता और समय का प्रबन्धन कैसे सिखाएँगे?

(क) खूब मेहनत और ज्यादा समय काम करना।

(ख) सभी काम की पूर्ण जानकारियाँ लेते रहना व ज्यादा समय तक काम करते रहना।

(ग) निश्चित योजना बना कर, काम को छोटे–छोटे टुकड़ों में बाँट कर, अपने अधीनस्थ कामगारों के समय का उपयोग करके, समय की सीमा बढ़ा कर।

(10) आप अपने बच्चे का सकारात्मक नजरिया बनाने में सहयोग देंगे—

(क) परम्परावादी विचारों और पुरानी प्रणालियों को मानते हुए।

(ख) नए विचारों और पुरानी प्रणालियों को जारी रखते हुए।

(ग) नैतिक मूल्यों के साथ नए व पुराने विचारों के मिश्रण के साथ नई प्रणालियों का सकारात्मक उपयोग।

अंक गिनें : क के लिए 2
ख के लिए 5
ग के लिए 10 अंक—खुद को दें।

कुल जोड़ कर आकलन देखें। कैसे माँ–बाप हैं आप?

80 से 100 अंक—आपके बच्चे खुशकिस्मत हैं कि उन्हें इतने परिपक्व माँ–बाप मिले। आपकी यही खूबियाँ उन्हें एक खुशहाल अमीर और जिम्मेदार इनसान बनाएंगी।

50 से 70 अंक—आप सबसे अच्छे माँ–बाप में शुमार हो सकते हैं, परन्तु थोड़ी कमी है, उसे पूरा करें जिससे कि और अच्छी परवरिश की जा सकती है।

15 से 45 अंक—सुधार की अपार आवश्यकता है। जाँचें कि आपका प्रदर्शन कहाँ बुरा है। बच्चे को समय ज्यादा देवें। यही युक्ति आपकी मददगार हो सकती है। बच्चों की जगह स्वयं को रख कर देखें और बच्चे के हिसाब से सोचें।

पतंग में संतुलन Balance of forces in kite

भौतिकशास्त्र के टीचर से एक स्टूडेण्ट ने क्लास में पूछा—सर, क्या पतंग सिर्फ डोर के कारण ही हवा में उड़ती रहती है?

टीचर ने जवाब दिया, नहीं। डोर, पतंग की बनावट, पतंग में डोर बाँधने की पोजीशन व संतुलन के लिए पतंग के पास कणिये की गाँठ व हवा, चारों मिल कर ही पतंग को आकाश में ऊपर उड़ाये रखते हैं। इनमें से एक का साथ छूटना—पतंग को नीचे गिरा देता है। उनके दबावों (Forces) में Equilibrium से ही पतंग आकाश में टिकी रहती है।

80/100 मार्क्स के अध्ययन–क्षेत्र में Equilibrium बनाए रखने के लिए सभी विषयों में संतुलन बनाए रखना जरूरी है। आकाश में पतंग जिस शिखर तक पहुँच कर ऊँचा उड़ती है, अंकों के क्षेत्र में उससे भी आगे बढ़ना है। क्योंकि इसका मुख्य कारण यह है कि

आप आकाश में जिस लक्ष्य रूपी पतंग को देख रहे हैं, उस लक्ष्य पर आपके अलावा भी सैकड़ों की पतंगें उड़ रही हैं। आप अकेले ऐसे टीनएजर नहीं हैं, न ही अकेले 80/100 मार्क्स वाले नौजवान हैं, बल्कि इस जगह बहुत-से टीनएजर्स की भीड़ लगी हुई है। भीड़ से आगे बढ़ना है।

माँ-बाप बच्चे को रट्टू तोता नहीं बनाएँ

ऐसे माँ-बापों की कमी नहीं है जो बच्चों पर हमेशा दबाव डालते रहते हैं कि वह Course (पाठ्यक्रम) की किताबें ही पढ़े। कई बार तो माँ-बाप बीच में बच्चों को चेक भी करते हैं कि वह वही पढ़ रहे हैं जो उनके पाठ्यक्रम से संबंधित है या कुछ और। भले ही टी.वी. (TV) देखते हुए ही बच्चा तोते की तरह रटता जा रहा है—और क्रिकेट का Live खेल देख रहा होता है। क्योंकि माँ-बाप को अपने बच्चे के विषयों की परीक्षा में पूछे जाने वाले सवालों और उसके लिखे जाने वाले संभावित जवाबों के रूप में ही पढ़ाना होता है। उससे आगे स्वयं उनको भी कुछ मालूम नहीं होता। कई बार दिन-रात रटने वाले बच्चे अच्छे नम्बरों से पास भी हो जाते हैं, लेकिन अगर ऐसे बच्चे अच्छे नम्बरों से पास हो भी जाएँ तो भी यह गारंटी नहीं होती कि रट्टू तोता जिन्दगी में धन-उपार्जन की परीक्षा में भी उतने ही अच्छे नम्बरों से पास होगा। बचपन खेलने के लिए है, किताबें रटने के लिए नहीं।

माँ-बाप की अहमियत का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इलेक्ट्रोनिक खिलौनों का मूल्य कम और ऊँची उड़ान पुस्तक का मूल्य अधिक लगता है। बच्चों का भविष्य बनाने और उन्हें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने के लिए इलेक्ट्रोनिक खिलौनों की बजाय अच्छी पुस्तकें खरीद कर पढ़ायें। ऐसा नहीं हो कि कल आपका बच्चा सिर्फ नौकरी के लायक ही रह जाए।

पूरा जीवन Complete Life

ऋषि योगीराज को चामत्कारिक ढंग से नदी के पानी पर चलते देख कर एक नवयुवक ने उनके पास जाकर पूछा—आपको इस चामत्कारिक साधना में कितने वर्ष लगे? मैं साधना को प्राप्त करने में आपके साथ हूँ, कृपया आप मुझे यह विद्या सिखलाओगे?

ऋषि योगीराज ने जवाब दिया—मैंने अपना पूरा जीवन इस साधना को पाने के लिए लगा दिया। नौजवान, क्या तुम अपना जीवन दे सकते हो?

हाँ, ऋषिराज, नौजवान ने जवाब दिया, मैं भी अपना पूरा जीवन दे सकता हूँ, इस चामत्कारिक शक्ति के लिए।

भारत के महान् योगी रामकृष्ण परमहंस यह सब बातें सुन रहे थे, तुरन्त बीच में बोल पड़े—नहीं नौजवान, नहीं। वर्तमान दौर सर्वश्रेष्ठता का है। दौड़ में सबसे आगे निकलने के लिए जीवन के समय का आदर्शतम उपयोग करना जरूरी हो गया है, वरना तुम पिछड़ जाओगे। किसी एक ऐसी चामत्कारिक शक्ति के लिए, जिससे नाविक के जरिए—एक रुपये में नदी पार की जा सकती है, पूरा जीवन लगा देना घाटे का सौदा है। जीवन में शिक्षा के महत्त्व के साथ चामत्कारिक शक्ति का महत्त्व, सदियों से हम देखते और महसूस करते आ रहे हैं, लेकिन समय के साथ हुए बदलावों ने सभी को यह जता दिया है कि पारम्परिक शिक्षा पद्धति और किसी एक शक्ति, एक केरियर के पीछे अपना सब-कुछ दाँव पर लगा देना अब प्रैक्टिकल नहीं रह गया है। वह भी तब, जबकि इसका दूसरा सस्ता साधन हमें उपलब्ध है। याद रखें कि योग्य और कामयाब इनसानों का मशविरा जितना अधिक फायदेमन्द होता है, अयोग्य और नाकामयाब लोगों के साथ रहना उतना ही ज्यादा नुकसानदायक होता है।

नौजवान युवक रामकृष्ण परमहंस के पैरों में गिर पड़ा। उसे अपनी मंजिल पाने के लिए सच्चा मार्गदर्शक मिल गया था।

बच्चों को चीजों को जोड़ना सिखाएं—तोड़ना नहीं

हम जानते हैं कि यदि बारह (12) बराबर रेखाओं को एक-दूसरे के अन्तिम सिरे से चौकोर (Square) रूप में जोड़े तो हमें एक घनाकृति (Cube) मिलेगी। यह याद रखना बड़ा आसान है ना। लेकिन कोई भी इनसान तब तक घनाकृति (Cube) का मतलब नहीं समझ सकता जब तक रेखाओं (Lines) और वर्ग (Square) का मतलब नहीं जानता हो। इस उदाहरण को समझ कर

ही आगे की चीजों को समझा जा सकता है—बच्चों को आसानी से याद करवाया जा सकता है। कोई भी रेखागणित का सवाल हो या विज्ञान का चमत्कार हो अथवा भारत के नक्शे (Map) में राज्य की राजधानियों की बात हो, बच्चे को रटने की जरूरत नहीं पड़ेगी। बच्चे गीली मिट्टी के समान होते हैं, उन पर पड़ा कोई भी प्रभाव जिन्दगी भर चलता है और वे उससे कभी बाहर नहीं निकल पाते। अफसोस यही है कि 99.9999 फीसदी माँ–बाप को इस तरह सिखाना व जोड़ना आता ही नहीं। उनको तो तोड़ना भले ही आ जावे।

विश्व की दो सबसे तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्थाओं—चीन और भारत के बीच अन्तर बढ़ता ही जा रहा है। उसका मुख्य कारण है बच्चों के आस–पास का माहौल, जहाँ बच्चों को आरम्भिक उम्र में जोड़ना ही सिखाते हैं। विश्व की पहली वाणिज्यिक मैगलेव ट्रेन फूडोंग अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डे और शंघाई शहर के बीच धड़धड़ाती चल रही है। आकाश में चुंबकीय बार पर चलने वाली यह ट्रेन तीस किलोमीटर का फासला पूरा करने में मात्र सात मिनिट लेती है। शून्य डिग्री सेल्सियस पर पानी भी अपना माहौल बदल कर जीव–जन्तुओं को जिन्दा रखने का तरीका सिखाता है।

बर्फ जमी झीलों–तालाबों में जिन्दा रहते हैं जीव–जन्तु

ठंडे प्रदेशों में वायुमण्डल का तापमान शून्य डिग्री सेल्सियस से कम हो जाने पर झीलों और तालाबों का पानी जम जाने के बाद भी जीव–जन्तु नहीं मरते हैं। वास्तविकता यह है कि बर्फ सिर्फ पानी की सतह पर ही जमती है—पानी के नीचे नहीं, जिसके कारण जन्तु द्रव में रहते हैं और मरते नहीं। रसायनशास्त्र (Chemistry) के अनुसार सभी द्रव पदार्थ गर्म करने पर फैलते हैं, परन्तु शून्य के आस–पास 4° C पर पानी एक ऐसा द्रव है जो इसकी पालना नहीं करता। शून्य डिग्री सेल्सियस पर पानी 4° C तक गर्म किया जाता है तो इसका आयतन (Volume) घटता है—फिर 4° C के बाद बढ़ता है। पानी का यह अनियमित प्रसार प्रकृति में बहुत ही महत्त्व का है। इसी के चलते सतह के नीचे बर्फ नहीं जमती और जीव–जन्तु पानी के अन्दर जिन्दा रहते हैं।

अक्लमन्द इनसान की दलीलों को थोथा नहीं मान सकते और ना ही उसके नजरिये और अनुभव को भी थोथा साबित कर सकते हैं। बच्चों का गणित उनके हक और हित में जाने के लिए जोड़ना सीखना होगा—तोड़ना नहीं।

बच्चे और स्वयं को करो बुलन्द इतना

बच्चों और स्वयं का मूल्य दूसरों के मापदण्डों पर आधारित नहीं होता है। आप तभी योग्य हो सकते हैं, जब आप अपनी योग्यता को मुखरित करते हों।

बच्चों व खुद को परिभाषित करने के लिए इनसान के पास विभिन्न प्रकार के विकल्प रहते हैं। खुद और बच्चों के मापदण्ड निर्धारित कर या तो आप स्वयं को बुद्धिमान समझ सकते हैं और वहीं दूसरी ओर, रिश्तेदारों, मित्रों, उच्च अधिकारियों या किन्हीं अन्य द्वारा बनाए गए नियमों के आधार पर स्वयं को पिछड़ा हुआ समझ सकते हैं। ऐसे में सवाल यह उठता है कि आप और आपके बच्चे अपने–आप को जितना प्रसन्नचित्त बनाए रखने में सफल होते हैं, आप उतने ही अधिक बुद्धिमान हैं।

यह सम्भव है कि कुछ क्षेत्रों में आप या आपका बच्चा अनुकूल प्रदर्शन न कर पाता हो।

उदाहरण के लिए आपका बच्चा गणित और रेखागणित में कमजोर हो सकता है या लेखन में उसका स्तर अच्छा नहीं है, या भौतिक विज्ञान में उसका मन नहीं लगता है। लेकिन इसको लेकर हतोत्साहित होने की या निराशा से भरे रहने की कोई आवश्यकता नहीं है।

गणित और रेखागणित में कमजोर होना सिर्फ और सिर्फ इस कारण है कि आपने सच्चे दिल से इस बारे में प्रयास ही नहीं किए। यदि आपने गणित और रेखागणित विषय पर औरों से अधिक समय देकर ज्यादा अभ्यास किया होता तो निश्चित रूप से आप भी अपने अन्य विषयों की तरह ही गणित में भी प्रवीण (Expert) होते। यह बड़ा आश्चर्यजनक लगता है, किन्तु सचाई यही है कि बुद्धिमत्ता नापने का पैमाना किन्हीं जन्मजात गुणों पर आधारित नहीं होता, बल्कि यह समय की सीमा पर आधारित होता है।

बिल गेट्स की माइक्रोसॉफ्ट कम्पनी ने एक बड़े महत्त्वपूर्ण पद के लिए विज्ञापन निकाला। इस पद के लिए अपनी योग्यता का दावा करने वाले एक सॉफ्टवेयर (Software) इंजीनियर के आवेदन करने के बाद मि. बिल गेट्स ने उसे इण्टरव्यू (Interview) के लिए बुलाया। मि. इंजीनियर ने अपनी शिक्षा और सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग का पूर्ण विवरण दिया। मि. बिल गेट्स को उसका पूर्ण विवरण सुनने के बाद ऐसा लगा कि शिक्षा एवम् सॉफ्टवेयर का ज्ञान अति उत्तम

है। परन्तु उन्होंने मि. इंजीनियर को सलाह दी कि आप इस व्यावहारिक व तकनीकी ज्ञान को वास्तविक व्यवहार में परिणत करके वापस उनसे एक महीने के बाद मिलें। इंजीनियर वापस लौट गया और बड़ी प्रसन्नता के साथ एक महीने तक सॉफ्टवेयर से सम्बन्धित पुस्तकों को घोटता रहा। उसे लगा कि माइक्रोसॉफ्ट जैसी दुनिया की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कम्पनी में उसे वह पद निश्चित ही मिलने वाला है। इंजीनियर फिर एक महीने बाद मि. बिल गेट्स से मिला और मि. गेट्स ने फिर पूर्ण जानकारी लेते हुए दुबारा उसे पहली जैसी बात कह कर वापस भेज दिया। अब उस इंजीनियर को समझ में आया कि सिर्फ किताबों का रट्टू ज्ञान काम नहीं आयेगा, तकनीकी ज्ञान को व्यवहार में उतारे बिना काम नहीं चलेगा। फिर यह हुआ कि वह सचमुच ही किताबी ज्ञान को व्यावहारिक ज्ञान में परिवर्तित करने लगा और उसने वास्तविक जिन्दगी में काम आने वाले Software Design (सॉफ्टवेयर डिजायन) कर डाले। जैसे ही वह इस तरह के व्यावहारिक ज्ञान में अपना ज्ञान परिवर्तित करने लगा—उसकी नौकरी के लिए पद की आवश्यकता और आकांक्षा भी जाती रही। उसे महसूस हुआ कि मि. बिल गेट्स ने दुनिया के तमाम नामी–गिरामी सॉफ्टवेयर इंजीनियरों की सेवाओं को ऊँचे ओहदे दिखा कर, ऊँची कीमत पर खरीद रखा है, जबकि इन सॉफ्टवेयर इंजीनियरों की सेवाओं की कीमत हजार गुणा अधिक कीमत से बेच रहा है। मि. इंजीनियर की आँखें खुल गईं। मि. बिल गेट्स ने जब उसके बारे में सुना तो उसके पास अपने दूतों को भेजा, उसने जवाब नहीं दिया। मि. बिल गेट्स स्वयं जब उसके पास चल कर गए तो उसने नम्रतापूर्वक उस पद को लेने से इनकार कर दिया। उसे जीवन का असली ज्ञान अब मालूम हो चुका था। अकसर अमेरिकन्स दुनिया के experts की सेवाएँ ऊँचे दामों में खरीद कर—पूरे संसार को लुभा रहे हैं। यही उनकी अमीरी का असली कारण है, जो आम इनसान समझ नहीं रहा है। उनकी सेवाएँ तो अमरीकन डालर में खरीदने व ग्रीन कार्ड प्राप्त होना ही जिन्दगी की सम्पूर्ण सफलताओं को पैमाना मान बैठना है।

परीक्षा की सीमा—तीन घण्टे—परन्तु बुद्धिमान घोषित

एक ही परीक्षा देने वाले विभिन्न औसत विद्यार्थी भी किसी भी समस्या को हल तो कर ही सकते हैं। लेकिन जो विद्यार्थी निश्चित सीमा (तीन घण्टे) के अन्दर अधिक से अधिक प्रश्नों को हल करने में सफल होता है—वह विशेष पैमाने के आधार पर बुद्धिमान घोषित किया जाता है।

यानी ऐसा कुछ भी नहीं है कि जिसे करने में दुनिया के सभी लोग सफल न हों। जो लोग असफल होते हैं, उसके पीछे कारण यह है कि उससे सम्बन्धित अभ्यास व मेहनत अधिक मात्रा में नहीं किया गया था। लेकिन आप निरन्तर सच्चे अभ्यास व परिश्रम से औरों के समकक्ष आ सकते हैं। होता यह है कि जिस विषय को लेकर आपके दिमाग में भय बैठ जाता है कि मैं इसमें अधिक प्रवीण नहीं हूँ, अथवा कमजोर हूँ, आप उस विषय से दूर भागने लगते हैं और अन्त में लम्बे समय के अन्तराल के बाद वह विषय आपकी सफलता की लिस्ट से बाहर हो जाता है। यह तो हुई अभ्यास और मेहनत की बात।

इस कारण से तीन घण्टे वाली बुद्धिमानी के अलावा स्वयं को बुद्धिमान समझना आपके लिए अत्यन्त आवश्यक है। आप ऐसा करते हैं या नहीं, इसका पता लगाना भी अत्यन्त सरल है। जैसे आपने अच्छा कार्य किया हो और कोई व्यक्ति इसके लिए आपको बधाई देता है, तब बधाई स्वीकार करने के बजाए आपके मुँह से निकलता है कि अरे, यह तो साधारण–सी बात थी या भाग्य के साथ देने की वजह से कर पाया। इस तरह के जवाब आपकी Nagative Image को दर्शाते हैं। हालाँकि सिर्फ अपना ही गुणगान करना किसी दृष्टि से उचित नहीं है, लेकिन किसी भी अच्छे कार्य पर मिली बधाई को धन्यवाद के साथ स्वीकार भी किया जाना चाहिए।

यदि आप स्वयं को और बच्चों को श्रेष्ठ समझते रहें तो कुछ ही समय बाद आपको ऐसा लगेगा कि जैसे आपके आत्मविश्वास में परिवर्तन आ गया है। यही आत्मविश्वास आपके जीवन में संघर्ष से लड़ने का सम्बल प्रदान करता है। आपका बच्चा इम्तिहान में कितनी ऊँची रेंक प्राप्त करता है, यह महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि महत्त्वपूर्ण यह है कि उसके इरादे, सपने और विश्वास कितने बड़े हैं। माँ–बाप को अपने बच्चे की अमीरी की गणित में एक–एक सवाल बड़ी सूझ–बूझ से हल करना पड़ता है—कहीं कोई चूक न हो जाए, इसकी सावधानी माँ–बाप को ही रखनी पड़ती है। दिशाहीन लक्ष्य और अस्पष्ट

निर्णय कभी भी भविष्य का निर्माण नहीं कर सकते। बच्चे का केरियर बहुत कुछ इस बात पर निर्भर नहीं करता कि उसे उसकी योग्यता के क्षेत्र में कितना अवसर मिला, बल्कि इस बात पर निर्भर करता है कि उसका लक्ष्य और सपनों की उड़ान कितनी ऊँची है।

दो मील किस दिशा में है?
Two miles way is in which direction ?

जहाज डूबने वाला था। जहाज में बैठे सभी यात्री चीख-पुकार कर रहे थे। तभी रोजर फेडर ने जहाज के कप्तान से पूछा—यहाँ से किनारा कितनी दूर है? कप्तान हड़बड़ाहट से बोला, लगभग दो मील। रोजर फेडर—बस, दो मील! फिर क्या! मैं तो अच्छा तैराक हूँ, बहुत-से इनाम भी जीत चुका हूँ और उसने समुद्र में जम्प लगा दी।

कूदने के कुछ देर बाद वापस तैरते हुए फिर से कप्तान के पास आया और उसने हाँफते हुए पूछा—कप्तान साहब, यहाँ से दो मील किस दिशा में है?

कप्तान ने कहा—पूर्व दिशा में। रोजर फेडर एक बार फिर हड़बड़ाहट में तैरते हुए आगे बढ़ गया।

कप्तान ने जोरों से चिल्लाते हुए पुकारा—रोजर फेडर तुम उलटी दिशा में तैर रहे हो। किनारा दूसरी तरफ है। परन्तु रोजर फेडर कप्तान की आवाज नहीं सुन सका और जहाज समुद्र में समा गया।

सही समय पर सही निर्णय किसी को भी शून्य से शिखर पर पहुँचा सकता है। परन्तु दिशाहीन लक्ष्य किसी भी इनसान के लिए अंधेरी सुरंग में भटकने जैसा है। कुछ लोग जीते हैं और सीखते हैं और कुछ लोग जीते हैं, परन्तु कभी नहीं सीखते। गलतियाँ हमें सुधार करने का एक मौका देती हैं। उनसे सीखना अक्लमन्दी का काम है, उनसे न सीखना ही सबसे बड़ी गलती है। गलती का दोहराना सबसे बड़ी गलती है। रोजर फेडर ने गलती को दो बार दोहराया। अच्छा तैराक होते हुए भी जान को गंवाना पड़ा। अंधेरे में सभी रंग एक समान काले होते हैं। सिर्फ सुन्दर पंखों से ही सुन्दर चिड़िया नहीं

बनती। मंजिल के बारे में सोचने और उस तक पहुँचने के बीच एक लम्बा फासला होता है। यह फासला कार्ययोजना पर पूरी तरह अमल करने पर ही मिट सकता है। यही बात 80/100 मार्क्स के लिए भी लागू होती है। क्या आपको यह सोच कर कभी हैरानी नहीं होती कि क्यों ज्यादातर बच्चे अपने अंकों के लक्ष्य पर नहीं पहुँच पाते? वे हमेशा विपरीत और नाजुक मौकों पर पराजित क्यों हो जाते हैं? इसका एक ही मुख्य कारण है कि गलतियों से सीखते नहीं, उन्हें बार-बार दोहराते जाते हैं।

छोटे-छोटे काम भी महानता के अन्दाज में करवाएँ

हम में से हर नौजवान युवक महान् कार्य नहीं कर सकता परन्तु हम नौजवानों में से हर कोई छोटा कार्य महान् ढंग से कर सकता है। हर बच्चा सर्वोच्च स्थान पर रहना चाहता है, हर कोई इतिहास रचना चाहता है, हर कोई अमीरी की दौड़ में लम्बी छलाँग भरना चाहता है, परन्तु हर कोई जानता है कि यह लम्बी छलाँग हर एक के लिए सम्भव नहीं है। नतीजा—निराशा, असफलता, गरीबी, तनाव और जिन्दगी को जीने का दबाव।

देखने में बहुत कठिन मुश्किलों के हल बहुत ही साधारण होते हैं। एक लीटर के जरीकेन (दिमाग) में एक लीटर दूध डालिए—सब-कुछ साधारण ही लगेगा परन्तु उसी मस्तिष्क में 5 लीटर दूध (ज्ञान) डालने की चेष्टा—आपको जिन्दगी में उलटा-पुलटा कर देगी। हर कोई बच्चा क्लास में फर्स्ट नहीं आ सकता, इस जगह पहुँचने वाला तो सिर्फ एक ही बच्चा होगा, फिर भला इस सीढ़ी पर नहीं पहुँचने पर आप और आपके बच्चे को तनावग्रस्त क्यों होना चाहिए? अगर आपका बच्चा बिल गेट्स या धीरूभाई अम्बानी जितना अमीर नहीं बन सकता तो कोई बात नहीं—उसे अपने गाँव या कस्बे का सबसे अधिक अमीर बनने का सपना जरूर दिखाएँ। काम न करने की कीमत से ज्यादा महत्त्वपूर्ण काम करने की कीमत है। सोचो, आपके बच्चे को क्या करवाना है? हालाँकि सपनों की कोई कीमत नहीं होती, परन्तु उन्हें सचाई में बदलने की कीमत तो चुकानी पड़ेगी। भले ही बच्चा धीमी गति से आगे बढ़ रहा हो, परन्तु महत्त्वपूर्ण यह है कि उसके सपने के आकार की सीमा छोटी तो नहीं हो गई है—यथार्थ में बदलने की सीमा में कहीं कमजोरी तो नहीं आई है। यही कमजोरी उसके 80/100 मार्क्स पाने में बाधक बन जाती है।

बच्चों में इच्छाशक्ति जाग्रत रखें/अमीर बनें

अण्डे से निकले एक पक्षी के नन्हे बच्चे के दूर गगन में उड़ जाने के पीछे एक ही कारण है और वो है—इच्छाशक्ति। इन दो शब्दों में ऐसी शक्ति है जो इनसान को 'ऊँची उड़ान' भरने में प्रबल शक्ति देती है। वास्तव में दुनिया के मुट्ठी–भर साहसी लोगों के जीवनचरित्र को देखा जाए तो सभी में एक ही गुण देखने को मिलेगा, वह है प्रबल इच्छाशक्ति।

इच्छाशक्ति का तात्पर्य है अपने निश्चित लक्ष्य को पूरा करने की प्रतिबद्धता। लेकिन यह उतना आसान भी नहीं है—जितना आसान बोलने में लगता है। भावावेश में आकर कुछ कह जाना अलग बात है। इच्छाशक्ति का मतलब है किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक दीपक की भाँति सतत जलते रहना। ऐसा इनसान न केवल अपने लक्ष्य से भली–भाँति परिचित रहता है, बल्कि अच्छी तरह जानता है कि उस कार्य को कब, कैसे और किस तरह पूरा करना है। ऐसा नहीं है कि यह इतना आसान हो।

लक्ष्य की प्राप्ति के लिए—अनगिनत कष्ट सहने पड़ते हैं, अपमान भी बरदाश्त करना पड़ सकता है, परन्तु इच्छाशक्ति अगर बड़ी हो तो बाकी सब छोटे पड़ जायेंगे।

इच्छाशक्ति के साथ–साथ धैर्य बना रहना परम आवश्यक है। धैर्य इच्छाशक्ति की निरन्तरता को बनाए रखता है। टूटने नहीं देता। इच्छाशक्ति के धनी और निर्धन आदमी में बहुत बड़ा अन्तर होता है। इच्छाशक्ति का महत्त्व इतना है कि अगर उसको साँप भी डस ले और उसे दृढ़तापूर्वक विचार आ जाए कि ऐसा नहीं है, तो उसे साँप का जहर भी असर नहीं करेगा। 80/100 मार्क्स की इच्छाशक्ति वाले टीनएजर को इस ओर जाने से कोई रोक नहीं सकता। यह तभी सम्भव है जब विद्यार्थी खुद को जाँचने–परखने की इच्छा रखता हो।

कुछ भी अध्ययन न करना सबसे बड़ी गलती है

गलत फैसला या फैसला न करने के कारण हम जिन्दगी में अहम मौकों को खो देते हैं। जिन्दगी में खतरे तो उठाएँ, मगर जुआ खेल कर नहीं। खतरा उठाने वाले युवा अपने आँख, कान खुले रखते हैं, जबकि जुआरी बन्द रखते हैं। खतरे उठाने वाले इनसान के लिए खतरे का मतलब—खतरा ही होता है—कोई अलग मतलब नहीं।

युवाओं के लिए जिम्मेदारीभरा खतरा उठाना उनके ज्ञान, ट्रेनिंग, अध्ययन के तरीके, आत्मविश्वास, प्रयोगों और काबिलीयत पर निर्भर करता है, जो उन्हें 80/100 मार्क्स के डर का सामना करने की हिम्मत देता है। परन्तु जो टीनएजर कभी कोई अध्ययन ही नहीं करेगा तो मार्क्स भी नहीं आएंगे। हालाँकि उस कच्ची उम्र में वह यह समझ नहीं पाता कि कुछ अध्ययन न करना ही उसकी सबसे बड़ी गलती है। यही गलती अगर वह अपने इंजीनियरिंग अध्ययन–काल में करता है तो फेल भी होता है—परन्तु अगर पक्का लक्ष्य निर्धारित कर लेता है तो गोल्ड मेडल भी हासिल करता है।

गोल्ड मेडल या फेल Gold Medal or Fail

बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी एण्ड साइंस (बी.आई.टी.एस), पिलानी, राजस्थान के वार्षिक डिग्री वितरण समारोह में चेयरमैन श्री जी.डी. बिड़ला ने एक इंजीनियरिंग विद्यार्थी को जब वे गोल्ड मेडल प्रदान कर रहे थे तो कहा—इस इंस्टीट्यूट ने बहुत बढ़िया शिक्षा दी है, तुम्हें इसका शुक्रगुजार होना चाहिए। इंजीनियर विद्यार्थी ने जवाब दिया—इसमें कोई शक नहीं कि इस इंस्टीट्यूट ने मुझे बहुत अच्छी शिक्षा, अध्ययन और अच्छे प्रयोगों के अवसर दिये हैं और मैं इसके लिए शुक्रगुजार हूँ, लेकिन चेयरमैन साहब, आप जरा उस समय को देखें जब मैं इसी इंस्टीट्यूट में दो बार फेल हो चुका हूँ। क्या यह वही इंस्टीट्यूट नहीं है?

ऐसा क्यों होता है? किस तरह एक ही विद्यार्थी अपनी परीक्षा में फेल होता है, जबकि कुछ समय बाद वही विद्यार्थी गोल्ड मेडल भी प्राप्त कर सकता है?

सेवाएँ बेचें नहीं, खरीदना सीखें
यह अमीरी की ओर रास्ता दिखाएगी।

— डा. राम बजाज

यदि ऐसा है तो बच्चों में इच्छाशक्ति का विकास कैसे किया जावे?

इसके लिए भी लगातार अभ्यास की आवश्यकता होती है। जरूरी नहीं है कि एक ही समय में उद्देश्य हमेशा बड़ा ही हो। बड़े उद्देश्यों को भी छोटे–छोटे

टुकड़ों में बाँटा जा सकता है। जैसे–जैसे उन छोटे–छोटे उद्देश्यों की पूर्ति होती जाती है, मनुष्य की इच्छाशक्ति और निश्चय और भी मजबूत होता जाता है।

इन्हीं सीढ़ियों से कदम–दर–कदम बढ़ते हुए एक ऐसा समय भी आता है जब इच्छाशक्ति का धनी आदमी अपने–आप को हर काम में सक्षम पाता है। अतः सफलता प्राप्त करने के लिए प्रबल इच्छाशक्ति के साथ प्रयास आपको हर ऊँचाई पर ले जायेगा।

इस नियम को कभी भी ना भूलें कि आपकी जिन्दगी सिर्फ आपकी है और इसके लिए केवल आप ही जवाबदेह हैं। अतः किसी परिस्थिति में दूसरे व्यक्ति द्वारा अपने–आप को नियंत्रित ना होने दें, नौकरी करके अपनी जिन्दगी की सेवाएँ दूसरों को किसी भी कीमत पर खरीदने ना देवें। यह अमीरी का प्रथम नियम है। 99.9999 फीसदी इनसान अपनी सेवाएँ—पगार में बेच देते हैं। प्रबन्धन की मात्र यह एक चूक इनसान को पूरी जिन्दगी गरीब बनने को मजबूर कर देती है—अमीर बनने का सिर्फ सपना ही रह जाता है।

आप और आपका बच्चा इस बात को बहुत महत्त्वपूर्ण समझे कि आप अपने आप में अनोखे हैं और बहुत ही महत्त्वपूर्ण इनसान हैं। बिल्कुल आप जैसा इस संसार में कोई हो ही नहीं सकता।

केवल इनसान में ही यह अद्‌भुत शक्ति है कि वह अपनी कमजोरी को भी ताकत में बदलने की गणित के सूत्र इजहार कर—अमीर बन सकता है। परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। जिसे इनसान ही परिवर्तित करता है, कोई दूसरा जीव नहीं। कुशल प्रबन्धन हर जगह अहमियत रखता है, जो इनसान द्वारा ही सम्भव होता है। अपने लक्ष्य के उद्देश्य का प्रबन्ध स्वयं करके—अमीर बनने का उद्देश्य पूर्ण करें। प्रबन्धन की मात्र एक चूक इनसान को प्रतिस्पर्धा से बहुत पीछे धकेल देती है। सेवाएँ बेचें नहीं, खरीदें। नहीं तो आपकी एक भूल आप को धरातल पर पटक देगी। अमीरी प्राप्त करने के लिए चाहिए कठोर परिश्रम, लगन और बड़ा लक्ष्य और इसमें से एक का भी साथ छूटना आपकी अमीरी में बाधक होगा। याद रखें, ईश्वर (प्रकृति) ने जब मस्तिष्क और हाथ बनाए तभी हमें सोचने, सपने सँजोने और काम करने की योग्यता भी दी है। खड़े होने का सबसे बेहतर प्लेटफार्म आपके पैर ही हैं। आप दौड़ नहीं सकते हो तो चलना जारी रखें—अमीरी की मंजिल कोई

ज्यादा दूर नहीं होती। इनसान के गुर्दे भी दिन–रात खून की गन्दगी को शरीर से बाहर निकाल कर शरीर की प्रबन्धन क्रिया में अपना अचूक सहयोग प्रदान करते हैं।

गुर्दों का महत्त्वपूर्ण कार्य

गुर्दों का महत्त्वपूर्ण कार्य खून की गन्दगी को शरीर से बाहर निकालना है। इसके अलावा गुर्दे शरीर में जरूरत से ज्यादा पानी की मात्रा हो जाने पर उसे मूत्र के रूप में बाहर निकालते रहते हैं, और रक्त को अधिक गाढ़ा या पतला नहीं होने देते एवं खून में हर चीज की मात्रा का संतुलन भी बनाए रखते हैं। प्रत्येक गुर्दे में दस लाख के करीब कुंडलदार नलियाँ होती हैं, करीब 1850 लीटर हृदय से आया हुआ खून इन नलियों में से होकर बहता है। इसमें से छानी गई गन्दगी गुर्दों में से मूत्राशय थैली में जाती है। थैली के भरने पर मूत्र के साथ यह गन्दगी भी बाहर निकल जाती है। गुर्दे के प्रबन्धन में मात्र एक चूक पूरे खून को विष में बदल देती है और इनसान को गर्दिश में धकेल देती है। डाइलिसिस से ही फिर खून को साफ किया जाता है। इनसान को इच्छाशक्ति जाग्रत रखने में बिना चूक के कार्य और परिश्रम को जारी रखना पड़ता है।

गॉडफादर नहीं, रोलफादर ढूँढ़ें
अमीरी का रास्ता अपने–आप मिल जायेगा।

कुछ इनसान मानते हैं कि अमीरी की सफलता के लिए गॉडफादर होना जरूरी है। गॉडफादर यानी ऐसा व्यक्ति, जो आपको उछालकर शिखर पर बैठा दे। यह गलतफहमी है। कोई किसी को उठा कर नहीं बैठाता और यदि कोई ऐसा करता है भी तो आपके अन्दर न्यूनतम योग्यता के बिना ऐसा करना सम्भव नहीं है। गॉडफादर का मिल पाना, न मिल पाना आपके वश में भी नहीं। हाँ, रोलफादर को ढूँढ़ पाना आपके हाथ में है। रोलफादर यानी ऐसा आदर्श पुरुष या स्त्री, जिससे सीखने की प्रेरणा मिलती हो। शायद माँ–बाप से बढ़ कर रोलफादर और मदर नहीं मिल सकेंगे। यह सच है कि व्यापार में सोच का नयापन आपको जबरदस्त कामयाबी दिला सकता है और यह भी सच है कि व्यापार में कामयाबी सिर्फ इसी बात से नहीं जुड़ी है कि आप किसे जानते हैं, बल्कि यह भी महत्त्वपूर्ण है कि आपको कौन जानता है। इनसान को एक असफलता के पीछे मन छोटा नहीं करना चाहिए। जब एक रास्ता बन्द होता

है तो (आत्मविश्वास से भरा लक्ष्य) ईश्वर दूसरा रास्ता खुद ब खुद खोल देता है। 99.9999 प्रतिशत इनसानों को न तो गॉडफादर मिलता है और ना ही कोई रोलफादर मिलता है—जिसके कारण इनसान अपनी साधारण स्थिति के घेरे में ही घिरा रहता है—उसको तोड़ कर अमीरी के घेरे में जाने के रास्ते ही नहीं मिलते—वह भटक जाता है।

बच्चे की तुलना एक ट्रेन से की जा सकती है। और उसके माँ–बाप की तुलना एक सिग्नल–मैन से। अगर ट्रेन को सही समय पर सही सिग्नल ना दिया जाये तो वह सही स्टेशन पर जाने की बजाय किसी अन्य स्टेशन पर चली जायेगी। जायेगी तो सही, क्योंकि चल रही है। बच्चा एक ट्रेन की तरह ही क्षमता वाला और काम करने वाला होता है। यदि उसे सही समय पर, सही लाइन पर, सही धन्धे पर डाल दिया जावे तो बाकी रास्ता वह खुद तय कर लेगा।

स्वर्ग व नरक

अमेरिकावासी मि. वीनस ने टैक्सी रोकी और ड्राइवर से पूछा, रेलवे स्टेशन का क्या लोगे?

दो डालर, टैक्सी ड्राइवर ने जवाब दिया।

समझदार मि. वीनस ने सोचा कि टैक्सी ज्यादा महँगी है, अतः उसने टैक्सी को जाने दिया और उसके पीछे–पीछे दौड़ लगा दी। जब वह काफी दूर आ गया तो उसने उसी टैक्सी को खड़ी देखी और पूछा, यहाँ से स्टेशन का कितना किराया लगेगा।

टैक्सी ड्राइवर ने कहा, चार डालर।

हैरान व्यक्ति ने पूछा, ऐसा क्यों? मैं काफी दूर दौड़ कर यहाँ आ चुका हूँ, फिर दुगुना किराया क्यों माँग रहे हो?

टैक्सी ड्राइवर ने कहा, इसलिए, क्योंकि रेलवे स्टेशन दूसरी दिशा में है।

हैरान वीनस के चेहरे पर पसीना छूट गया।

हालाँकि स्वर्ग व नरक की दूरी बराबर है—परन्तु है विपरीत दिशा में। अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप अक्लमंदी से कौन–सा रास्ता चुनते हैं। माँ–बाप को शुरू से ही बच्चे को सही लाइन पर डालना होगा, तभी वह आगे

बढ़ने में सक्षम होगा। शार्क मछली का कोई भी दाँत अगर टूट जाए तो कुछ ही दिनों में दुबारा आ जाता है, फिर चाहे यह घटना कितनी भी बार क्यों ना हो? बच्चों में शोहरत और कामयाबी पाने की जो उनके अन्दर ललक होती है, जल्द ही अपना रास्ता तलाश लेती है और वे आसानी से 80/100 मार्क्स हासिल करना सीख जाते हैं।

एक गुलाम One sleve

गुलामों की प्रथा के समय एक बार संत उमर को एक गुलाम पालतू कुत्तों को अभ्यास कराते हुए मिला। उन्होंने पूछा, क्या इनमें से तुम एक अच्छा कुत्ता बदल कर दे दोगे?

गुलाम ने जवाब दिया, माफ करें महानुभाव, ये पालतू कुत्ते मेरे नहीं हैं। इनका मालिक दूसरा है। मैं तो सिर्फ उनको अभ्यास करवा रहा हूँ।

तब उमर ने फिर पूछा, अभी तो यहाँ मालिक नहीं है, मुझे एक कुत्ता बदल कर चुपचाप दे दो। मालिक को पता भी नहीं चलेगा क्योंकि कुत्तों का रंग एक जैसा है।

गुलाम ने फिर थोड़ा गुर्राते हुए कहा, मालिक नहीं है तो क्या हुआ? भले ही उनको पता नहीं चले, परन्तु मैं ऐसा काम नहीं करूंगा। मैं आपसे फिर माफी माँगता हूँ कि आप मुझे गलत काम करने का नहीं कहें।

उमर ने यह सब सुना तो बोले, तुम सचमुच नेक दिल और बड़े ईमानदार इनसान हो। खुदा तुम जैसे आदमियों को ही पसन्द करता है। उन्होंने मालिक को मुँहमाँगा दाम देकर गुलाम को चँगुल से मुक्त कराया। फिर संत उमर ने यह कहकर विदा ली, जिस तरह मैंने तुम्हें गुलामी के जाल से छुड़ाया है, तुम भी दूसरे गुलामों को आजाद कराना मत भूलना।

समय ने पलटा खाया। डाकुओं के एक गिरोह ने एक इनसान को बन्दी बना लिया, परन्तु रास्ते में जाते वक्त आजाद गुलामों के इनसानों के झुंड ने मुकाबले में उस बन्दी को आजाद करा दिया। बन्दी के मुँह से धन्यवाद निकला तो झुंड के सरदार ने जवाब

दिया, धन्यवाद की कोई जरूरत नहीं है, इनसानी फरिश्ते, आपको शायद याद नहीं है कि आपने मेरी सहायता करके मुझे गुलामी के जाल से छुटकारा दिलाया था। आपके हुक्म के मुताबिक मैं इस झुंड के गुलामों को आजाद करा कर, कल्याणकारी कार्यों में लगा रहता हूँ।

जीवन की कहानी में कई रंगों के साथ-साथ उतार-चढ़ाव भी देखने को मिलते हैं। परन्तु अच्छाई अपना रास्ता ढूँढ़ ही लेती है। यह प्रकृति का नियम भी है। आप स्वर्ग सिर्फ इसलिए जाना चाहते हैं कि आपको बतलाया गया है कि वहाँ चारों तरफ खुशियाँ ही खुशियाँ हैं। सिर्फ खुशियाँ। अगर आपके जीवन को यहीं स्वर्ग बनाना है तो दूसरों की मदद करना सीखें। यहीं चारों तरफ खुशियाँ ही खुशियाँ मिलेंगी। ज्यादातर दूसरे लोगों का व्यवहार हमारे ही व्यवहार का आईना होता है। अच्छे व्यवहार वाला आदमी अपना व्यक्तित्व नहीं बदलता। बदलती है तो उसके आस-पास की परिस्थितियाँ। अतीत को मुस्कराहटों के साथ याद करें, आँसुओं के साथ नहीं।

बच्चों की भीतरी शक्तियों को जगाओ/बड़ा व्यापार आपके सामने होगा।

परिश्रम के हर काम का नतीजा जीवन में मील का पत्थर (Mile Stone) साबित होता है। हर परिश्रम की एक छाप छूट जाती है। वह परिश्रम जब भी दोहराया जायेगा, छाप गहरी होती जायेगी। यह गहराई जैसे-जैसे बढ़ेगी, स्वभाव उतना-उतना दृढ़ होता जायेगा। सफलता के व्यापार में अधिकाँश ऊर्जाएँ इससे प्रभावित होने लगती हैं। परिणाम, व्यापार और अवसर, खुद-ब-खुद सामने आने लगेंगे। उम्मीद और सफलता की किरणें हर जगह पर, हर स्थान पर हमेशा बाकी रहती हैं, जिनसे संघर्ष और मेहनत द्वारा कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है। कहते हैं कि नाकामी में ही कामयाबी छुपी रहती है।

इनसान को परिणामों को देख कर, समझ कर अगला कदम तय करना पड़ता है। जहाँ दिशा बदलनी पड़े तो, बदलनी ही पड़ती है। नहीं तो अनिर्णीत परिणामों की जंजीर लम्बी हो जायेगी, जिसको तोड़ना बाद में आसान नहीं होगा।

आज जो-कुछ भी हम कर रहे हैं, अपने भविष्य का ही निर्माण कर रहे हैं।

आप सोच सकते हैं कि आपका भविष्य कैसा होगा, आज तो हमारे पास अनेक विकल्प हैं। परिश्रम और कार्य शुरू करने पर ही विकल्प का परिणाम निकलेगा। मेहनत नहीं करने पर विकल्प भी नहीं होंगे और परिणाम भी नहीं निकाल सकेंगे।

फिर हम भाग्य को कोसते हैं। भाग्य को कोसने से काम नहीं चलेगा। परिणाम के लिए परिश्रम और काम करना पड़ेंगे।

परिश्रम और बुद्धिमानी—एक अप्रवासी पक्षी की UNESCO World Heritage Site

यूनेस्को द्वारा घोषित दुनिया की पुरातत्त्व जगह, जो हिन्दुस्तान, राज्य राजस्थान के भरतपुर शहर के पास स्थित केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (Keoladeo National Park) में अप्रवासी पक्षियों के प्रवास के दौरान Shell Duck के दो युवा पक्षी वहाँ गेस्ट हाउस के एक कमरे में उड़ते हुए फंस गए। जिसमें काच की खिड़कियाँ और दरवाजे लगे हुए थे। उनमें से एक पक्षी खिड़की से पार जाने के लिए भरसक अपनी शक्ति का उपयोग करते हुए बार-बार काच से टकराता रहा और बार-बार बाहर निकलने का प्रयत्न करता रहा। अन्त में भारी परिश्रम के कारण बाहर तो नहीं निकल सका परन्तु जान जरूर गँवा बैठा।

दूसरा युवा पक्षी पहले वाले पक्षी का परिणाम देख कर, चुपचाप बैठ गया और अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करते हुए लक्ष्य की दिशा बदल दी। काच की खिड़की से सिर (Head) फोड़ने की बजाय दरवाजा खुलने का इंतजार करने लगा और ज्योंही चौकीदार ने सफाई करने के लिए दरवाजा खोला, उसने लम्बी उड़ान भरी और बाहर गगन में सैर के लिए निकल पड़ा। सफलता के व्यापार में ऊर्जाओं को बुद्धि से प्रभावित करना सीखें। भेड़चाल के हिसाब से परिश्रम नहीं करेंगे तो अमीरी के रास्ते में काच की खिड़कियों की जगह, नए दरवाजे, नई राह के लिए खुल ही जायेंगे। 80/100 मार्क्स के लिए बार-बार काच से टकराना नहीं पड़ेगा।

आपके पास ऐसी कोई चीज नहीं है जो भगवान्
आपसे माँगता है। भगवान् सिर्फ देता है और
देता है—लेता कुछ नहीं।

—डा. राम बजाज

वो क्या है जो मेरी तकदीर बदल देगा?
What is that which changes my luck?

काम–काज की जगहों पर दो तरह के लोग मिलते हैं। 99.9999 फीसदी वे, जो दिन–भर अपनी तकदीर को कोसते रहते हैं। उनका मानना रहता है कि **साढ़े साती शनि उतर जायेगा** और शुक्र की महादशा आएगी, तब सब ठीक–ठाक हो जायेगा। दूसरी तरह के लोग भले ही शुरुआत किसी छोटे काम से करें लेकिन उनकी नजर लगातार ढूँढ़ती रहती है कि वह क्या है जो मेरी तकदीर बदल देगा और उसके लिए अच्छा धन्धा कौन–सा है? ऐसे लोग बजाए किसी को कोसने के, अपने आस–पास तरक्की के ऐसे मौके तलाशते हैं जहाँ उनका रुझान होता है। ऐसे लोगों की कुंडली किसी ज्योतिषी को दिखाने की जरूरत नहीं। समय का चक्र आगे बढ़ता है और उनका मनपसन्द काम और व्यापार उनके सामने आ जाता है—अमीरी की राह पकड़ लेते हैं। जिन्दगी में व्यापार के नए रास्ते, नई राहें और नई मंजिल खुद चुन लेते हैं। हर घने काले बादल के साथ बिजली चमकने की लकीर भी रहती है।

काम करने वालों और लगन के साथ काम करने
वालों में बहुत अन्तर होता है, जो गरीबी और
अमीरी का कारण बनता है।

—डा. राम बजाज

मेरी तबीयत ठीक नहीं

हर कार्य को करने में कठिनाइयाँ आती हैं लेकिन कठिनाइयों का बखान कर आप कार्य पूरा कर लेने की योग्यता को सीमित कर लेते हैं।

सामान्य बोलचाल में दो तरह की शिकायतें बहुत अधिक चलन में हैं। यह भी सच है कि इन दोनों से ही व्यक्तित्व का नुकसान होता है। पहली शिकायत है, दूसरों को बताना कि मैं बहुत थक गया हूँ और दूसरी यह है कि मेरी तबीयत

ठीक नहीं है। दोनों ही बातों का प्रभाव सामने वाले व्यक्ति पर यह पड़ता है कि आप काम करने में रुचि नहीं रखते। यदि आप वास्तव में थके हुए हैं तो इसका राग अलापने की बजाए आप कुछ देर मनोरंजन कर पुनः काम में जुट सकते हैं। सपनों की उड़ान को हकीकत के धरातल से मत टकराओ, वरना ठेस लग जायेगी।

निराश होने के लिए करीब 72 माँसपेशियों को सिकुड़ना पड़ता है, जबकि मुस्कराने के लिए 15 को। अतः हँसते रहना ही सफलता की बड़ी निशानी है। शुरुआत (Start) करना, समझो आधा काम निबटाना। अगर नए काम की शुरुआत कर दी तो आधा काम तो हो गया—बाकी आधे काम के लिए ही आपको सारी मेहनत और परिश्रम करना पड़ेगा।

कुछ काम करो, कुछ काम करो
जग में रह कर निज नाम करो

—कवि मैथिलीशरण गुप्त

स्वयं का भविष्य—वर्तमान

आज का दिन आपका बाकी जिन्दगी का पहला दिन है।

सचाई

अकसर आम आदमी की दिक्कत यह है कि हमने अपने–आप को एक घेरे में बाँध लिया है। अपने लिए पुराने चले आ रहे नियम–कायदे और विषय तय कर रखे हैं।

आवश्यकता नहीं है कि हम भी पूर्वजों की तरह लीक पर ही चलें। हमें इस वर्तमान युग में खुले मन से नया मार्ग प्रशस्त करना चाहिए। तभी भीतरी शक्तियों का दोहन कर सकेंगे। उनको विकसित कर सकेंगे। अपने स्वयं का भविष्य बना सकेंगे। इसके लिए पहली आवश्यकता है कि हमारा वर्तमान न बिगड़े। हम उसका पूरा उपयोग कर सकें। हम केवल वर्तमान में ही जीना सीखें। जो बीत गया वो काम नहीं आयेगा। बिना सोचे कुछ भी करते रहना वर्तमान की हत्या है। दिशाहीन कोरी कल्पना (सपने) भी भविष्य का निर्माण नहीं कर सकती। केवल वर्तमान पर आँख रख कर कार्य करना ही सुखद भविष्य और अमीरी की कुंजी है।

परिवर्तन सृष्टि का नियम है। जो आज है, वैसा कल नहीं रहता। आप जो आज हैं—वो दस साल पहले नहीं थे और दस साल बाद आप आज जैसे नहीं होंगे।

चिंता चिता समान तो होती है, साथ ही यह एक ऐसी रिवाल्विंग चैयर की तरह होती है, जो घूमती तो है—लेकिन कहीं ले नहीं जाती।

—डा. राम बजाज

जो भी है, बस यही पल है

80/100 अंकों की दौड़, भविष्य को आकार देने या योजनाओं के बनाने की जल्दी में हम एक छोटी–सी सचाई को नजरअन्दाज कर देते हैं व भूल भी जाते हैं। वह सचाई की भूल यही कुछ है—बस यही पल है, जिसे हमें भरपूर जीना है और मान कर चलना है कि अगर हम हैं तो सब–कुछ है। इस सचाई व भूल को हमें कभी नहीं भूलाना चाहिए।

99.9999 फीसदी टीनएजर्स की जिन्दगी के तार इतने उलझ जाते हैं कि समझ में नहीं आता, सिरा कैसे पकड़ा जाए। ऐसे में स्थिर होकर विचार करें, तो न सिर्फ सिरा मिल सकता है, बल्कि मन को खंगालने से कई मनोवैज्ञानिक सवालों का हल भी मिल सकता है। इन सवालों का सीधा ताल्लुक हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी से है—लेकिन चूँकि हम इनकी तरफ देखते ही नहीं, तो इनके बारे में कुछ सोचते भी नहीं। विचार भी उपचार की तरह काम करते हैं। मन–मंथन से निकलने वाले विष और अमृत में से आपने क्या स्वीकारा, जीवन का स्वरूप उस पर निर्भर करता है। ये विचार और मंथन सबसे सटीक भोर (सुबह) के वक्त, अर्धनिद्रा में उपजते हैं जो सम्भवतया सटीक और खरे ही साबित होते हैं।

▣ *एडीसन से जब पूछा गया कि उनके एक हजार से अधिक प्रयोग नाकामयाब हुए हैं? तो उन्होंने आपत्ति जताई और कहा, मुझे इन बातों का तो ज्ञान हो ही गया कि इन एक हजार तरीकों से मैंने एक नया तरीका ढूँढ़ निकाला है। हमें भी 80/100 मार्क्स के नए तरीके ढूँढ़ने होंगे।*

दरवाजा कैसे खुलता है? How the Door is open?

एक नौजवान ने अपने डाक्टर को अपनी समस्या बतलाई।

डॉक्टर साहब, हर रात मैं लघुशंका के लिए तेज दौड़ता हूँ तो एक बन्द दरवाजे से टकराता हूँ। मैं इस दरवाजे को अपनी पूरी ताकत से धकेलता हूँ, परन्तु वह खुलता ही नहीं है।

डाक्टर ने पूछा, अच्छा, क्या वह भारी–भरकम पुराना दरवाजा है?

नहीं डाक्टर, वह एक सामान्य आधुनिक काच का दरवाजा है जिस पर कुछ लिखा है।

डाक्टर ने फिर पूछा, क्या तुम पढ़ सकते हो कि उस पर क्या लिखा है?

हाँ, उस पर लिखा है Pull(खींचो)—नौजवान बोला।

डाक्टर ने आँखें फाड़ कर नौजवान के चेहरे की तरफ देखा और आश्चर्य से एक बार फिर उससे पूछा, फिर उसे पुल (खींचा) क्यों नहीं करते, धकेलते क्यों हो?

नौजवान ने एक बार फिर उत्तर दिया, रात के अंधेरे में पूल (Pull) लिखा हुआ दिखता नहीं है।

ऐसे नौजवानों की जिन्दगी के तार इतने उलझे रहते हैं कि उनको दिखना भी बन्द हो जाता है कि दरवाजे को आगे धकेलना है या फिर पीछे खींचना है। इन सवालों का सीधा जवाब आपकी जिन्दगी से है, जिसकी तरफ हम देखते ही नहीं।

रास्ते खोजने से मिलते हैं, भटकने से नहीं।

—डा. राम बजाज

छोटे–छोटे काम भी सर्वश्रेष्ठ अन्दाज में करें

99.9999 फीसदी इनसान कोई महान् कार्य नहीं कर सकते। परन्तु आम इनसानों में से हर कोई छोटे कार्य महान् ढंग से कर सकता है। हर कोई ऊँचे स्थान पर रहना चाहता है, हर कोई इतिहास रचना चाहता है, हर कोई अमीरी की दौड़ में लम्बी छलाँग भरना चाहता है, परन्तु हर कोई जानता है कि यह

लम्बी छलाँग हर किसी के लिए संभव नहीं है। नतीजा निराशा, असफलता, गरीबी, तनाव और जिन्दगी जीने का दबाव।

इन सब को मिटाने में आज भी सचाई बहुत शक्तिशाली हथियार है। सचाई और ईमानदारी के रास्ते पर चलने वाले इनसान को खुशी ही खुशी मिलती है। सच बोलने की आदत बनाने में सालों भले ही लग जायें, परन्तु एक बार भी आप सच बोलने की आदत बना लें तो जानेंगे कि आपके आत्मविश्वास में कितनी भारी वृद्धि हुई—आप आजमाकर देखिए। आप कल्पना ही नहीं कर पायेंगे कि आपका विश्वास कितनी ऊँचाइयों पर उड़ रहा है—जहाँ आपको रास्ते खुद–ब–खुद नजर आते जायेंगे—अवसरों का अम्बार लग जायेगा, छोटे–छोटे काम अपने–आप श्रेष्ठता से हल होते जायेंगे। दुनिया को एक झटके में बदलने वाले लोग हर साल पैदा होते हैं, जब किसी न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण नियम, किसी एडीसन का बल्ब, किसी ग्राहम बेल की ट्रिन–ट्रिन और किसी हेनरी फोर्ड की कार असेंबली मिलती हैं। बदलाव के ये स्वरूप आपके सामने विभिन्न दूसरे रूपों में भी उपलब्ध हैं।

ब्रिटेन में लन्दन के उपनगरीय शहर लीसेस्टर में एक नौजवान वकील ट्रेवर फिलिप्स ने वकालत का धन्धा ईमानदारी से करना शुरू किया परन्तु चला नहीं। एक दिन एक बुढ़िया ने उसको अपना केस थमाया जिसमें उसके रिश्तेदारों ने हत्या के अपराध में फंसाने का षड्यन्त्र रचाया ताकि उसकी सारी जायदाद हड़प ली जाय। वकील फिलिप्स ने निचली अदालत में केस की पैरवी की और विभिन्न कानूनी दाँव–पेच के साथ ईमानदारी के सबूत पेश किए, परन्तु सामने वाले वकील के अनैतिकता के गवाहों और सुबूतों के आधार पर बुढ़िया को सजा हो गई।

बुढ़िया को वकील फिलिप्स सारे दस्तावेज वापस लौटा कर बोला, झूठे कानूनी दाँव–पेंच के सहारे मैं यह केस जीत तो सकता हूँ, परन्तु मेरे संस्कार में ऐसा नहीं है, कृपया आप यह केस किसी दूसरे नामी वकील को सुपुर्द कर देवें तो आप इसमें बच सकती हैं।

बुढ़िया ने मि. फिलिप्स से ही ऊँची अदालत में अपील करने का अनुरोध करते हुए कहा, नौजवान वकील, आगे बढ़ो... आगे बढ़ो और आगे बढ़ो। ईमानदारी की हमेशा विजय होती है।

वकील फिलिप्स ने अगली सेशन अदालत में फिर ईमानदारी से केस लड़ा परन्तु मजिस्ट्रेट ने बुढ़िया की सजा को कायम रखा।

इस बार फिर बुढ़िया ने फिलिप्स को कहा, और आगे बढ़ो।

फिलिप्स ने हाईकोर्ट में बुढ़िया की सजा के विरुद्ध अपील की, परन्तु वहाँ भी फिर वही नतीजा निकला। सामने वाले वकील ने झूठ–सच का दाँव खेला और अपील फिर खारिज कर दी गई।

बुढ़िया ने सुप्रीम कोर्ट में अपील दायर करने के लिए फिलिप्स से आग्रह किया और कहा, फिलिप्स, ईमानदारी के साथ आगे बढ़ो, मंजिल ज्यादा दूर नहीं है।

सुप्रीम कोर्ट में पेशी के वक्त वकील फिलिप्स ने जज की ओर देखते हुए बहस की और कहा जज साहब, अगर मैं अनैतिकता और झूठ के सहारे केस लड़ता तो मैं निचली अदालत में ही केस जीत चुका होता, परन्तु नैतिकता और संस्कार के सहारे यह मेरे लिए असंभव था। आप कृपया इन दस्तावेजों को देखें कि जिस दिन हत्या हुई थी—उस दिन बुढ़िया लंदन के लीसेस्टर में थी ही नहीं। इन झूठी गवाहियों के लिए दूसरे दस्तावेज आपके सामने पेश कर रहा हूँ, साथ ही बुढ़िया का लीसेस्टर शहर में उस दिन नहीं होने का सुबूत।

जज साहब, जो कि ईमानदारी के उपासक थे, वकील फिलिप्स की तरफ देख अवाक् रह गए। बुढ़िया को बाइज्जत बरी कर दिया गया। वकील फिलिप्स नामी ईमानदार वकीलों में गिना जाने लगा। बुढ़िया ने मरने से पहले करोड़ों पौंड की धन–सम्पत्ति नौजवान वकील फिलिप्स के नाम कर दी। ईमानदारी और परिश्रम के बल पर वकील फिलिप्स अमीर बन गया। उसके आनन्द की सीमा नहीं थी और विश्वास इतनी ऊँचाइयों पर था कि उसने छोटे–छोटे कामों को श्रेष्ठ अन्दाज में किया।

ईश्वर के रंगमंच का हर बच्चा जन्मजात कलाकार होता है, अब यह उसकी परवरिश पर निर्भर करता है कि वह उसे कौन–सा कलाकार बनाती है। ***—डॉ. राम बजाज***

बच्चा खुद जानेगा तब ही खुद सीखेगा

(अ) बच्चों को प्रोजेक्ट पर काम करना सिखाएँ

कोई भी काम करने से पहले बच्चे को उसका मानसिक नक्शा बनाने के लिए कहें। बच्चा किसी प्रोजेक्ट पर काम कर रहा है, तो रूपरेखा बनाने के लिए कहें। कौन–सी चीज कहाँ से एकत्र करनी है, उसमें से क्या काम आयेगा और क्या नहीं आयेगा; क्या नहीं करना है, जिससे समय की बचत हो। इस तरह तैयार किए गए प्रोजेक्ट से बच्चा जिन्दगी के बड़े मसलों के लिए तैयार होता है। व्यापार के रास्ते बचपन में ही सीखने को मिल जावें, तो उसका खुद पर विश्वास भी बढ़ेगा। 99.9999 फीसदी माँ–बाप ऐसा नहीं करते। बच्चों का कोई पैदाइशी रंग नहीं होता। दुनियादारी का रंग तो बाद में चढ़ता है। अब यह आप पर निर्भर है कि आप उस पर कौन–सा रंग चढ़ाते हैं।

(आ) बच्चों को घर से बाहर के साधनों का इस्तेमाल करना सिखाएँ

मिसाल के तौर पर अगर बच्चा स्वयं थोड़ा बुखार या खाँसी से पीड़ित है तो डाक्टर के पास अकेले भेजिए। डाक्टर की मदद लेने व बीमारी व देखभाल की जानकारी लेने के लिए प्रेरित कीजिए। जानकारी बढ़ाने के अलावा यह तरीका बच्चे की सामाजिक झिझक दूर करेगा। 99.9999 माँ–बाप बच्चे को स्वयं ले जाकर ही डाक्टर से सलाह लेते हैं। उसको पहल करने का अवसर ही नहीं देते।

(इ) बच्चों को विभिन्न मुद्दों पर विचार–विमर्श के लिए प्रेरित करें

विभिन्न मुद्दों पर विचार–विमर्श से बच्चों में सामान्य ज्ञान के अलावा तर्क–क्षमता विकसित होती है, जिसकी आगे चलकर अमीरी के प्रयास में नितान्त आवश्यकता पड़ती है। अगर बच्चा शरीर की कोशिकाओं के बारे में जानकारी चाहता है, जैसे कि 99.9999 फीसदी माँ–बाप को अपनी स्वयं की कोशिकाओं की जानकारी नहीं होती।

(ई) कोशिकाएँ क्यों महत्त्वपूर्ण होती हैं?

हमारे शरीर में पानी के अलावा जटिल रसायन भी बड़ी मात्रा में होते हैं जो शरीर में बिल्डिंग ब्लाक्स की तरह की छोटी–छोटी संरचनाएँ बनाते हैं, जिन्हें

कोशिकाएँ कहा जाता है। शरीर में हर कोशिका स्वतंत्र, अलग–अलग होती है। उसकी भूमिका भी अलग होती है। हमारे शरीर में लगभग 50000 अरब कोशिकाएँ होती हैं। नर्व कोशिकाएँ सामान्यतः लम्बी और धागे के आकार की होती हैं, क्योंकि इन्हें हमारे तंत्रिका–तंत्र में (संचारलिंक) स्थापित करना होता है। लाल वक्र कोशिकाएँ इतनी सूक्ष्म होती हैं कि इन्हें माइक्रोस्कोप से ही देखा जा सकता है। इनका काम शरीर में आक्सीजन की आपूर्ति और कार्बनडाइऑक्साइड का उत्सर्जन करना होता है। सफेद रक्त कोशिकाओं का मुख्य काम शरीर को बाहरी आक्रमणों से बचाना होता है। बैक्टीरिया या वायरस की तलाश के लिए इन्हें अन्य कोशिकाओं के बीच में जाना होता है अतः इनका आकार निश्चित नहीं होता। अन्य कोशिकाएँ शरीर में अलग–अलग तरह के प्रोटीन्स के उत्पादन को कन्ट्रोल करती हैं, जो हमारे शरीर के लिए जरूरी होते हैं। है ना कोशिकाओं का कमाल जो हमें बीमारियों से बचाती हैं!

परन्तु एक बात वैज्ञानिक खोजों से साबित हो चुकी है कि 90 फीसदी मरीज कोरोनरी धमनियों के भीतरी व्यास के संकुचन से ग्रस्त होते हैं। धमनियों में चर्बी की परतें जमने से संकरापन आ जाता है और वे सख्त हो जाती हैं जिससे एंजाइना और दिल के दौरे की संभावना उत्पन्न हो जाती है। मुख्य कारण कोलोस्ट्रोल की अधिकता, धूम्रपान, उच्च रक्तचाप, मधुमेह और रक्त सम्बन्धी रोग इनके कारणों में से हैं।

(उ) बच्चों को स्वतंत्र सोच विकसित करने का मौका दें

बच्चे को उसकी सहज जिज्ञासा के लिए तर्क–वितर्क के साथ समाधान बतलाएँ, जैसे हवा कैसे चलती है, बरसात कैसे होती है, चन्द्रमा और पृथ्वी किसके चक्कर लगाती हैं आदि–आदि। माँ–बाप की तरफ से अपने बच्चे को जो सबसे खास चीज मिल सकती है, वह है मजबूत बुनियाद। बच्चों के अच्छे विकास और अच्छे मार्क्स के लिए जरूरी है कि इन पर समय लगाएँ। बचपन में हासिल की गई शिक्षा बड़ा होने पर उन्हें एक आदर्श इनसान बनाती है।

(ऊ) बच्चों के संघर्ष की तारीफ करें

बच्चा तभी हिम्मत और विश्वास जुटा पायेगा जब काम को खुद पूरा कर दे। गमले में बीजों से पौधे, फसल उगाने के बारे में अगर बच्चा संघर्ष करता है तो

उसकी तारीफ करें। इससे उसकी हिम्मत और आत्मविश्वास बढ़ जाता है। जिन बच्चों को उनकी कच्ची उम्र में संघर्ष का महत्त्व समझाया जाता है, आमतौर पर वे उसे कभी नहीं खोते। ये जिन्दगी का एक हिस्सा बन जाते हैं। और इसी की आज टीनएजर्स में तलाश है। वास्तव में संघर्ष ही 80/100 मार्क्स की बुनियाद है। युवाओं पर असर डालना आसान होता है, क्योंकि ये आसानी से प्रभावित हो जाते हैं। जब युवा बच्चे अपने संघर्ष की बातें अपने माँ–बाप को सुनाते हैं तो उन्हें गर्व होता है और फिर अच्छे मार्क्स लाने में जुट जाते हैं।

(ए) मैं कर सकता/सकती हूँ का पाठ पढ़ाएँ/लीडर बनाएँ

मैडम ने जब क्लास में प्रश्न पूछा तो सिर्फ राम ने हाथ खड़ा करके उसका उत्तर देना मुनासिब समझा। मैडम के पूछने पर बाकी बच्चे एक–दूसरे को देखते रहे, झिझकते रहे। राम के लिए यह उसकी नेतृत्व क्षमता का पहला पायदान है। बच्चे के विकास में नेतृत्व का यह गुण महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वे निर्भीकता का पाठ जल्दी सीखते हैं। नेता जन्मजात नहीं होते, बनाए जाते हैं। किसी भी बच्चे का स्कूल की गतिविधियों में भाग लेने का तरीका ही उसके व्यक्तित्व की व्याख्या कर देता है। जरूरी नहीं कि हर बच्चे में कुशल नेतृत्व के गुण हों। लेकिन हर बच्चे में अपनी बात कह पाने का माद्दा हो, यह जरूरी है। कोई भी बच्चा तब नेतृत्व कर पाता है, जब उसे मौका मिले। घर का वातावरण ऐसा रखें कि वह आप पर निर्भर न हो। बच्चा जितनी स्वतंत्र सोच रखेगा, नेतृत्व का गुण उतना ही निखरेगा। हर बच्चा मॉनीटर नहीं हो सकता, लेकिन मौका पड़े तो आत्मविश्वास के साथ यह काम कर सकता है। नेतृत्व का यही आधार है। छोटी–छोटी परेशानियों का हल खुद को खोजने दीजिए। आगे चल कर वह स्वयं अपना व्यापार ढूँढ़ कर अमीरी की ओर बढ़ जायेगा।

(ऐ) बच्चों को जिम्मेदारी से खरीददारी करने भेजें

छोटी–मोटी वित्तीय समस्याओं के प्रति उचित निर्णय के लिए, उचित निर्णय की समझ रखने के लिए, बच्चों को शुरुआत से ही उनकी जिम्मेदारी पर खरीददारी करने भेजें। ऐसा करने से निवेश तथा उसके प्रतिफल के बारे में स्पष्ट तस्वीर उनके दिमाग में घर कर जावेगी ताकि अपने भावी जीवन की हर

समस्या का सामना वे समझदारी, जिम्मेदारी और आत्मविश्वास से कर सकें। जी हाँ, इस बात का पूरा दारोमदार माँ–बाप पर ही निर्भर करता है कि वे वित्तीय मामलों में अपने बच्चों को कितनी अहमियत देते हैं। खरीददारी करने से पहले जरूरत की चीजों की सूची, सख्ती से बजट की पालना, अपनी बचत का पूरा उपयोग।

(ओ) बचपन से ही बचत, बजटिंग या मोलतोल क्यों जरूरी है? बच्चों में इन आदतों का बीज आज से ही बोएँ

एक अरबी कहावत है कि ईश्वर के रंगमंच का हर बच्चा जन्मजात कलाकार होता है। अब यह उसकी परवरिश पर निर्भर करता है कि वह दुनिया के रंगमंच का कलाकार बन पाता है या नहीं। परवरिश यानी माँ–बाप, परिवार, स्कूल, समाज और आस–पास का वातावरण उसे जीवन जीने की सीख और संस्कार देता है, वह सब परवरिश की सीख के दायरे में ही आता है।

बच्चों की पैसों सम्बन्धी हर जिज्ञासा का उचित जवाब देवें। नोट गिनने के लिए देवें। एटीएम (ATM), क्रेडिट कार्ड, बैंक, चैक आदि के महत्त्व को समझाएँ। बैंक से चैक के मार्फत उसी के हाथों रुपया निकलवाएँ या जमा करवाएँ। खर्च और आमदनी का हिसाब उसी से करवाएँ और बचत का महत्त्व समझाएँ। छुट्टियों में कमाई के साधन बताएँ और हो सके तो करवाएँ। बचत का पाठ पढ़ाएँ और उपहार में दी गई राशि बैंक खाते में जमा होकर किस तरह धीरे–धीरे बढ़ रही है—समझाएँ। हरेक काम के बाद बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ता जाता है, जिससे अगली बार सफल होना आसान हो जाता है। इसी वजह से अच्छे माँ–बाप बच्चों के काम की शुरुआत आसान कामों से करवाते हैं। सफल काम के बाद बच्चों के विश्वास और स्वाभिमान का स्तर बढ़ जाता है। इसके साथ अच्छा इनाम भी जोड़ दिया जाए तो यह अच्छे स्वाभिमान का रूप लेना शुरू कर देता है। वे सिर्फ जीनियस ही नहीं, बल्कि मेहनतकश टीनएजर बन जाते हैं। वे अतीत के बारे में नहीं सोचते, क्योंकि अतीत के बारे में सोच कर समय बरबाद करना होता है। भविष्य की योजना बनाने में वे देरी नहीं करते।

1. **बचत का पाठ पढ़ाएँ**

   उपहार के दौरान प्राप्त रकम, जो उसके बैंक खाते में रखी गई है, धीरे–धीरे ब्याज के साथ बढ़ रही है।

2. **खर्च के सुझाव**

अपनी जमा राशि के खर्च का किस तरह निर्धारण करे, समझाएँ। रबर, पैंसिल खरीदने जैसे छोटे–मोटे खर्च स्वयं उठावे।

3. **जीवनमूल्यों का पाठ सिखाएँ**

अपनी सारी पॉकेट मनी को सुनामी जैसे जनहित कार्यों में दान करवाना सिखाएँ।

ऐसा होमवर्क, जिससे बच्चों को न तो पर्याप्त सोने का समय मिले और ना ही खेलने–कूदने का—यह बिल्कुल उलटा चक्कर है।

—डा. राम बजाज

सच्ची दोस्ती True Friendship

हिन्दुस्तान के एक राज्य राजस्थान में विश्वप्रसिद्ध काले हिरणों का उद्यान ताल छापर (सुजानगढ़) है। रोज घूमने वाले छापर के युवा अर्जुन की एक काले हिरण के बच्चे से दोस्ती हो गई। युवा सुबह–शाम रोज घूमने जाता, साथ में कच्ची मोठ की हरी घास, उस युवा हिरण के बच्चे को खिलाता और उसके साथ अठखेलियाँ करके वापस घर आ जाता। दोस्ती गाढ़ी हो गई। लम्बे समय तक यह सिलसिला चलता रहा। एक दिन युवा इनसान ने हिरण के बच्चे को कहा, आओ मित्र हिरण, आज मैं तुम्हारी बहुत देर से प्रतीक्षा कर रहा हूँ। तुम्हारी नाभि में कस्तूरी है, वह इनसानों के लिए अमूल्य है, मुझे इसे दे दो।

हिरण ने शकभरी दृष्टि से उसकी ओर देखा और सोचने लगा कि कोई भी हिरण अपनी कस्तूरी को खोकर जीवित नहीं रह सकता, यह मेरा सच्चा मित्र भले ही ना हो, मुझे सच्चे मित्र की परीक्षा में खरा उतरना होगा।

हिरण बोला, इनसानी दोस्त अर्जुन, कस्तूरी मेरी नाभि में है, इसे काट कर निकाल लो, परन्तु यह समझ लेना महत्त्वपूर्ण है कि यह अपनी अंतिम भेंट होगी। विश्वास और पक्की दोस्ती इतनी मजबूत

होती है कि वह हथौड़े की चोट से भी नहीं टूटती और विश्वास रूपी दीपक हवा के तेज झोंकों से भी नहीं बुझता। मित्र अर्जुन, विश्वास और दोस्ती, भले ही वन्य जीवों से ही क्यों ना हो, वह कभी नहीं मरती, वह अजर और अमर रहेगी। परन्तु अविश्वास और स्वार्थ हमें कमजोर व शक्तिहीन बना कर अंधे कुएँ में धकेल देता है। आज का इनसान स्वयं अपनी जड़ों को खोदकर, अपने वादों और दोस्ती को निभाने में जान-बूझकर गलती कर रहा है। शायद यह उनकी परम्परा बन गई है। सच्ची दोस्ती और विश्वास का सम्बन्ध आन्तरिक भावनाओं, आदर्शों तथा सद्भावना रखने से है। सोचने वाली बात यह है कि वन्य जीवों का इस तरह वध करके इनसान क्या हासिल करना चाहता है? वन्य जीवों का भी अपना समाज होता है, अपना परिवार होता है। परिवर्तन के इस दौर में इनसान अकसर सोचता है कि जो-कुछ वह कर रहा है उसमें वन्य जीवों पर कोई फर्क नहीं पड़ता। दरअसल वह गलत दिशा में सचाई को नापने की कोशिश कर रहा है। सच तो यह है कि मुसीबत के क्षेत्रों में वन्य जीवों की थोड़ी-सी मदद भी हमारी जिन्दगी में बहुत महत्त्व रखती है। गुजरे कल को तो नहीं बदला जा सकता, परन्तु आज को संवारने की ताकत तो इनसानी हाथों में है।

विश्वास और दोस्ती

बात उन मूल्यों (विश्वास और दोस्ती) की है जिन्हें इनसान पाने से पहले ही खो देता है। एक खोना होता है उनका वध करके, एक खोना होता है उनसे रिश्ता समाप्त कर लेना। सोचें (अर्जुन) कि क्या कभी हमने अन्तिम बार वन्य जीवों की आँखों में झाँक कर उनकी पीड़ा और उदासी को समझा है?

वध की पीड़ा और संतुलन

दुनिया में सत्य और असत्य, देव और दानव, अच्छे इनसान और बुरे इनसान, धर्मी और अधर्मी प्रत्येक युग, शताब्दी में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते रहते हैं। सत्य का आभास व अनुभव उसे होता है जिसने असत्य का भी सामना किया है। अमीर इनसान की

भी कद्र तभी होती है जब उसका सामना गरीबी से हुआ हो। परिवार में वध की पीड़ा वही झेल सकता है जिसने वन्य जीवों में जन्म लिया है। जीवों के संसार की खूबियों को समझना इनसान के लिए थोड़ा मुश्किल हो सकता है। परन्तु यह मुमकिन है—कठिन नहीं। खूबियों के जरिये—वन्य जीवों को संरक्षण का आभास सबसे पहले स्वयं अपने मन में होता है। नजर (दृष्टि) के अनुसार ही जीवों के संरक्षण का स्वाद चखने को मिलता है। नजरिये के अनुसार ही सारी दुनिया दिखती है। जैसा अर्जुन तुम चाहोगे, वैसी ही संगति मिलेगी। यह है संसार के भविष्य की नींव। गॉडावण (बस्टर्ड), सफेद बाज, काले हिरण, बाघ, चीता आदि वन्य जीवों की घटती संख्या को देख कर, समझ कर, इनसान को अगला कदम तय करना चाहिए, नहीं तो वन्य जीवों का संतुलन बिगड़ जायेगा। आखिरी बात, जो वन्य जीवों के ललाट पर लिखी हुई रेखाएँ—इनसान को चेतावनी देती हैं कि अभी भी समय है—चेत जाओ, वरना वन्यजीवों व चरागाह के खात्मे पर प्राकृतिक संतुलन की गड़बड़ाहट से इस दुनिया में भूचाल आ सकता है। यह धरती एक खूबसूरत किताब है जिसमें वन्य जीव, पेड़–पौधे भी आपके सच्चे मित्र हैं। सच्चे मित्र आपका कभी भी साथ नहीं छोड़ेंगे, भले ही सांसारिक मित्र आपको दुःख और पीड़ा पहुँचाते हों। कहते–कहते हिरण की आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली।

युवा इनसान अर्जुन बोला, माफ करना दोस्त हिरण, मैं गलत था। दोस्ती की गाड़ी ऐसी नहीं हो सकती जिसमें एक पहिया छोटा और दूसरा बड़ा हो। तुम्हारे त्याग ने मेरी जिन्दगी ही बदल दी। तुमने उन एहसासों और भावनाओं को जोड़ दिया, जिनके बारे में कोई जानता भी नहीं था। मैं अतीत के बारे में सोच कर समय बरबाद नहीं करूँगा। आज आदमी तरक्की की दौड़ में इतना अन्धा हो गया है कि वह अपना और अपने भावी सच्चे मित्रों का हित–अहित, ग्रासलैण्ड इकोलोजी को भी नहीं समझ पा रहा है।

वन्य जीवों, पेड़–पौधों का अपना अर्थशास्त्र होता है। वादा करता हूँ कि इनकी रक्षा, संरक्षण, खुले चरागाह के विकास में अपना और

साथियों का जीवन बिता दूँगा। अब से क्रान्ति लाऊँगा कि कोई भी इनसान इनका वध व शिकार न करे और ग्रासलैण्ड (चरागाह), वनों की रक्षा के साथ और विस्तार की योजना बनाए। सदा की भाँति अर्जुन ने हिरण दोस्त से विदा माँगी और अपनी भूल पर पछतावा किया।

समय ने करवट ली। आज ताल छापर के लोग हिरणों और वन्य जीवों का वध और शिकार नहीं करते। कोशिश रहती है कि उनको कष्ट नहीं पहुँचाएँ। गलती कबूल करने वाले इनसान को शर्मसार नहीं होना पड़ता। आज आधी दुनिया यह नहीं जानती कि बाकी आधी दुनिया कैसे रहती है? वह क्या करती है?

बच्चों को भी तो चाहिए—अपना फ्रेंड सर्किल

चार से पाँच साल के बच्चों के खेल के दौरान कई कल्पना के दोस्त बन जाते हैं। बच्चा उनकी उपस्थिति के बिना ही स्वयं के साथ संवाद स्थापित करके उनके साथ खेल में व्यस्त रहता है। बच्चा खिलौनों को भी अपना दोस्त बना कर मानवीय पात्रों की भाँति उनसे संवाद कायम करता है। अपने काल्पनिक और वास्तविक दोस्तों के साथ सामाजिक व्यवहार—उसके भीतर आत्मविश्वास को ज्यादा पुख्ता करता है। अतः बच्चों को दोस्त बनाने के लिए....

1. आप पड़ोस के बच्चों के साथ मिलने–जुलने का अवसर उपलब्ध करवाएँ।
2. बच्चों को साथ रख कर सामाजिक दायरा बढ़ावें।
3. बच्चों को पार्क में ले जावें। खेल–मैदान में भेजें।
4. बच्चों को दूसरों के घर भेजने की आदत डालें।
5. दूसरों के बच्चों को भी बुलाएँ।
6. बच्चों के साथ स्वयं भी घुल–मिलकर रहें।
7. बच्चों को कहानियाँ जरूर सुनाएँ। बच्चों से भी कहानी सुनें।
8. बच्चों का आपस में परिचय करवाएँ। दोस्त बनाने के लिए स्कूल में समय–समय पर उपहार (टॉफी, बैलून, पैंसिल, रबर) देवें।

बच्चों की उत्सुकता को बनाए रखें

बच्चों की परवरिश के दौरान ऐसे उदाहरण सामने आते हैं कि बच्चे की उत्सुकता पर ध्यान न देकर उसे जबरदस्ती पढ़ने बैठा दिया जाता है। बच्चों के ड्राइंग, सिक्के इकट्ठे करने के शौक को अकसर नजरअंदाज कर दिया जाता है जिससे धीरे–धीरे उनमें आत्मविश्वास की कमी, किसी चीज को जानने की रुचि या समझ धीरे–धीरे दम तोड़ देती है। उनमें नकारात्मक सोच पनपने लगती है। अतः बच्चे की जन्मजात छिपी क्षमता को निखारने के लिए माँ–बाप को उसकी रुचियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जाने–अनजाने में बच्चों की रुचियों को आप शरारत समझ कर नजरंदाज कर देते हैं, इस स्थिति में बच्चों की उत्सुकता और कल्पना करने की शक्ति खत्म हो जाती है।

सही जानकारी, मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मिलने पर आपका बच्चा उन ऊँचाइयों को छू सकता है, जिनकी आपने कल्पना भी न की हो। इसलिए इच्छाएँ उस पर थोपने से पहले उसकी इच्छाओं का सम्मान करना सीखें, जो अकसर 99.9999 फीसदी माँ–बाप नहीं करते हैं, जिसके कारण बच्चे के व्यक्तित्व का विकास हो ही नहीं पाता। कच्चे घड़े को रूप देना आपके हाथ में है। सफलता की परिभाषा चाहे अलग–अलग हो, लेकिन मंजिल एक है। परीक्षा का नतीजा किसी के लिए भले ही अच्छा नहीं दिखे—परन्तु देखने का तरीका अलग होना चाहिए। जिन्दगी हर कदम पर परीक्षा लेती है। केवल पढ़ाई में 80/100 मार्क्स अथवा हर कक्षा में प्रथम आने से हर लड़ाई नहीं जीती जा सकती। जिन्दगी में बहुत–कुछ अनचाहा भी सहन करना पड़ सकता है। जिन बच्चों में हिम्मतभरा लचीलापन होता है, वे दूसरों के मुकाबले मुसीबतों से जूझने एवं गलतियों से सीखने और आगे बढ़ने में सक्षम हो जाते हैं।

बच्चों के फेल होने पर आपका दायित्व क्या है?

बच्चों के फेल होने पर आपका दायित्व बनता है कि आप उन कारणों का पता लगाएँ जिनसे ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई। बच्चे की अंकतालिका का विश्लेषणात्मक ढंग से अध्ययन करें और देखें कि किस विषय में कमजोर है—उसका कारण क्या है? विद्यालय में स्थिति का पता लगाएँ। घर में पढ़ाई का अनुकूल वातावरण बनाएँ। टेलीविजन को हमेशा के लिए ना सही, पर यथावश्यक बन्द कर देवें। परीक्षा में फेल को सामान्य घटना समझें तथा फेल की घटना की पुनरावृत्ति नहीं हो इसके लिए बच्चे को मानसिक तौर पर तैयार

करें। डाँट–फटकार या पिटाई कोई समाधान नहीं है। आपका बच्चा कहीं गैर–लाइन की ओर तो नहीं जा रहा है—जरूर ध्यान देवें। किसी के फेल होने का उसकी सफलता या असफलता से कोई सम्बन्ध नहीं है—परन्तु फेल होने के प्रति इनसान के रवैये से बहुत फर्क पड़ता है। जिन्दगी में इस बात का महत्त्व बहुत अधिक होता है कि आप अपने काम को कितने अच्छे तरीके से करते हैं, जिसमें पास होना भी जिन्दगी का एक अहम हिस्सा होता है।

बच्चों के व्यवहार में बदलाव—माँ–बाप के लिए खतरे की घंटी।

—डा. राम बजाज

अगर बच्चों के व्यवहार में अचानक बदलाव आ रहा है तो कृपया माँ–बाप ध्यान देवें। यह उनके लिए खतरे की घंटी है। कहीं परवरिश में खामी है।

माँ–बाप ध्यान देवें—खतरे की घंटियाँ

1. बच्चे निराशा या सहायताविहीन होने जैसी नकारात्मक बात करें।
2. जब मृत्यु जैसे विषयों पर चर्चा करें।
3. जब परिवार, मित्रों और घरवालों से, सामान्य–गतिविधियों से दूर रहने लगें।
4. जब जरूरत से ज्यादा गुस्सैल, हिंसक या आक्रामक हो जाएँ।
5. ड्रग या शराब का इस्तेमाल करने लगें।
6. अचानक परीक्षा–परिणाम बिगड़ने लगे, बोरियत की शिकायत करने लगें या एकाग्रता में कमी बताने लगें।
7. जब दिल से कुछ अच्छा नहीं लगने की शिकायत करें।
8. बहुत अवसाद में होने के बाद जब अचानक बहुत खुश दिखने लगें।
9. माता–पिता और परिवार के सदस्य गैर लगने लगें।
10. माता–पिता के अस्तित्व को नकारने लगें।
11. एक गलतफहमी उनके दिमाग में घर करने लगती है कि वे अब समझदार हो गए हैं और भला–बुरा समझ सकते हैं।
12. बच्चों और माता–पिता के बीच संवादहीनता की स्थिति हो।
13. एकल परिवार और कामकाजी माँ–बाप के रहते, मैं अकेला हूँ की भावना घर कर गई हो।

14. गलत दोस्तों की संगत।
15. रात को पढ़ाई के बहाने देरी से आना और चुपके से घर में प्रवेश करना।

माँ–बाप कारण जानें और निराकरण करें

निराकरण :

1. बच्चों को खुली छूट ना दें। देर रात की पार्टियों में जाने से रोकें—जहाँ मौज–मस्ती करते हैं। पार्टियों में साथ जावें। पूरी नजर रखें।
2. बच्चों के निर्णय में भागीदार बनें। पढ़ाई के विषयों के चयन, केरियर व भविष्य की दिशा में मार्गदर्शक बनें।
3. हर काम में बच्चों को एक्टिव रखें ताकि शराब, ड्रग से दूर रहें। उन्हें खेल, संगीत, कला, साहित्य, रचनात्मक कार्य आदि सकारात्मक रुचियों की तरफ मोड़ें। उचित माहौल देवें।
4. शराब, ड्रग, धूम्रपान व जुए से दूर रखें। जन्म से ही इस आदत की हीनभावना पैदा कर दें। धूम्रपान में तो इसी फार्मूले को अपनाएँ। घृणा का बीज बो दें। शराब आदि का नाम लेना ही वर्जित कर दें।
5. पैसे का महत्त्व समझाएँ। पॉकेटमनी का नियंत्रण और हिसाब जरूर रखें। कहीं ज्यादा पॉकेटमनी शराब, सिगरेट व जुए की आदत नहीं डाल दे।
6. सेक्स पर समय–समय पर बात करते रहें।
7. जल्दी सोने और जल्दी उठने की आदत जरूर डाल देवें।
8. जरूरत से ज्यादा ताक–झाँक भी ठीक नहीं, काम में लगाए रखें।
9. उनकी दुनिया का हिस्सा बनें। संवादहीनता मत आने दें। ज्यादा से ज्यादा जानकारियाँ लेने और देने का पाठ पढ़ाएँ।
10. दिनचर्या की गतिविधियों की हर शाम को रिपोर्ट जरूर ले लेवें। ज्यादा समय बच्चों के साथ गुजारें।
11. ईमानदारी और सचाई का पाठ ही सब दोषों व बुराइयों का निराकरण है। झूठ बोलना पाप है—जरूर सिखाएँ और हमेशा सच बोलने की आदत डाल देवें।
12. क्रिएटिव इंटेलीजेन्स की वृद्धि के उपाय बचपन से ही करें।

बच्चा कोई भौतिक विज्ञान या रसायन विज्ञान का फार्मूला नहीं है

बच्चा कोई भौतिक विज्ञान या रसायन विज्ञान का फार्मूला नहीं है कि बार–बार प्रयोग करके देखा जाए या दिखाया जावे। बच्चे का सम्बन्ध आन्तरिक भावनाओं, आदर्शों तथा सद्भावना बनाए रखने से है। ध्यान रहे और हमेशा याद रखें कि बच्चे पर कोई बात या विषय थोप कर या मात्र अंकों के परीक्षण के डर से आप क्रिएटिव इंटेलीजेन्स नहीं बढ़ा सकते। यह क्रिएटिव इंटेलीजेंस आदर्श विचारों एवम् आदर्श व्यवहार को दर्शाने के माध्यम से प्रशिक्षित करने का विषय है। इन्हें अपने कार्यों, आचरणों, उदाहरणों, विश्वास एवम् प्रेरणा के फार्मूले के रूप में सिखाया जा सकता है। प्रतियोगिता के इस युग में असाधारण अंकों का पाना, वास्तव में इतना कठिन नहीं है। ध्यान रखें, यदि उनमें प्रतिभा है तो जिन्दगी में वे कभी भी ऊँचाई पर पहुँच सकते हैं। बच्चों की डिक्शनरी में असंभव चीज कुछ भी नहीं है। बच्चों को जब उनके माँ–बाप एवं शिक्षक खुद पर नियंत्रण करना एवं रास्ता खोजना सिखाते हैं तो उनमें हिम्मत पैदा होती है।

नकारात्मक फार्मूले		**Nagative Formulas**
उपेक्षा	—	झगड़ालू बच्चा
फटकार	—	गुमसुम बच्चा
मारपीट	—	दब्बू या अपराधी बच्चा
अतिखर्चीलापन	—	जिद्दी बच्चा
अतिविश्वास	—	घमण्डी बच्चा
गरिष्ठ भोजन	—	आलसी बच्चा
अंधविश्वास	—	भाग्य पर भरोसा करने वाला बच्चा
अतिलाड़–प्यार	—	उद्दण्ड बच्चा
सकारात्मक फार्मूले		**Positive Formulas**
शाबासी	—	उत्साही बच्चा
सुनने वाला	—	समझदार बच्चा
विश्वास	—	अनुशासित बच्चा
तर्क–वितर्क (Discussion)	—	जीनियस बच्चा

काम में सहयोग	—	स्मार्ट बच्चा
प्राकृतिक भोजन	—	फुर्तीला बच्चा
माँ–बाप से दोस्ती	—	आत्मविश्वासी बच्चा
स्वयं काम करना	—	आत्मनिर्भर बच्चा
काम पूरा करना	—	मेहनती व लक्ष्य पूर्ण करने वाला बच्चा
गलतियाँ कम करना	—	अमीरी की ओर जाने वाला बच्चा

खुशबूदार फूल धीरे–धीरे आते हैं, घास जल्दी–जल्दी।

—डा. राम बजाज

तब नहीं बिगड़ेंगे बच्चे

शुरूआती 10 वर्ष से 12 वर्ष की उम्र तक जिन बच्चों को माँ–बाप का भरपूर लाड़–प्यार तथा समय नहीं मिला, साथ में ऐसे माँ–बाप, जो अपने बच्चों को सोता हुआ छोड़ कर काम पर जाते हैं और वापस काम पूर्ण करके रात को जब घर लौटते हैं—उनके बच्चे ज्यादातर टेलीविजन के सामने रहते हैं। स्कूल जाकर पढ़ने से ज्यादा मटरगस्ती में ही खोये रहते हैं। अमेरिका के वाशिंगटन विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक फ्रेडरिक जिमरमन के परिणामों के मुताबिक—बचपन में जो माँ–बाप अपने बच्चों के मन को भली–भाँति पढ़ते हैं, उन्हें अच्छे किस्से–कहानियाँ सुनाते हैं, भरपूर समय देते हैं, उनके बच्चे स्कूल जाकर अन्य बच्चों के मुकाबले ज्यादा अनुशासित और सहनशील होते हैं। मि. जिमरमन के विश्लेषण के अनुसार बच्चों में नकारात्मक, हिंसक और बुरी आदतों का मुख्य कारण टी.वी. के ऐसे कार्यक्रम देखना ही है।

बच्चे कौन–से मूल्य सीख रहे हैं, किस तरह की गतिविधियों में लिप्त होने की आशंका है, गलत रास्ते पर भटकाव के लिए उन पर पैनी नजर रखने की जरूरत रहती है। उचित माहौल की कमी और उनके साथ अनुचित व्यवहार ही बच्चों को उदण्ड (बिगडैल) बनाने में मदद करता है। अतः इन मापदण्डों को बदलकर बच्चों को भरपूर समय दें, तभी बच्चे बिगड़ेंगे नहीं। बच्चों के लिए कोई भी काम करना सरल होता है—परन्तु उनके लिए सोचना थोड़ा कठिन होता है। ऊँचे और उत्तम अध्ययन से उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। खुशबूदार फूल (बच्चे) धीरे–धीरे उगते हैं, घास जल्दी–जल्दी।

क्रिएटिव इंटेलीजेंस यानी सृजनात्मक बुद्धि बच्चों में बढ़ाएँ

जब इनसान व्यवसाय में क्रिएटिव इंटेलीजेंस का इस्तेमाल करने लगता है तो समझो वो आम इनसान से कुछ अलग है तथा अमीरी के सूत्र जानने लग गया है।

दरअसल हमारी शिक्षा प्रणाली में हमें जो बताया जा रहा है, उसे वह तयशुदा प्रश्नों को तयशुदा जवाबों के साथ स्वीकार करने को कहती है। किताबें, शिक्षक, भौतिक शास्त्र के नियम जो कहते हैं, वह पूरा सच है। वहीं दूसरी और दुनिया जिज्ञासाओं से भरपूर है। क्रिएटिविटी के लिए कोई खास दिमाग नहीं, खास माहौल की जरूरत होती है—ऐसा माहौल, जो जिज्ञासा और विचार प्रोत्साहित करता हो।

एक शोध के मुताबिक क्रिएटिव यानी **सृजनात्मक क्षमता वाले इनसान में ये गुण विकसित** करने चाहिए—

1. हौसला और स्वतंत्र सोच।
2. जोखिम उठाने की क्षमता।
3. चुनौतियों से आनन्दित होना।
4. संवेदनशीलता और वैचारिक क्षमता।

इनसान में ये **गुण नहीं** होने चाहिए—

1. दूसरों के निर्णय को बिना सोचे–समझे स्वीकार करना।
2. दूसरों के नजरिए को बिना सोचे–समझे नकार देना।
3. जिस माहौल में रह रहा हो—उसके प्रति उदासीनता।
4. अपने कार्य को बेहतर बनाने में अरुचि।

बच्चों में सृजनात्मक क्षमता के लिए उसे ऐसा माहौल व परवरिश दीजिए, जहाँ—

1. माहौल व वस्तुओं को जाँचने–परखने का प्रोत्साहन मिले।
2. सृजनात्मक सोच का विकास हो।
3. कल्पना करने की स्वतंत्रता मिले।
4. विकल्पों पर विचार करने को प्रोत्साहित किया जाए।

टोम और जैरी TOM & JARRY

बच्चों में टोम एण्ड जैरी सबसे पसन्दीदा कार्टून टी.वी. प्रोग्राम है। परन्तु इस कार्टून की उपज, चूहे के पीछे बिल्ली की दौड़, उसे पकड़ने के प्रयास, चूहे का बार-बार अपने बिल में घुस जाना और वापस बाहर निकल कर बिल्ली को चकमा देने आदि हरकतों को देखकर हुई थी। एक नन्हे चूहे-बिल्ली के छोटे बच्चे के यह सब खेल देख कर टोम और जैरी कार्टून प्रोग्राम की शुरुआत हुई।

बच्चों में क्रिएटिविटी के लिए कोई खास दिमाग नहीं, खास माहौल की जरूरत होती है। ऐसा माहौल, जो जिज्ञासा और नये आइडिया प्रोत्साहित करता हो। अक्लमन्द इनसान कोई महान् काम नहीं करते बल्कि अपनी सृजनात्मक क्षमता वाले महान् गुणों से छोटे काम भी महान् ढंग से करते हैं।

क्रिएटिविटी किस माध्यम से बढ़ाई जा सकती है?

क्रिएटिविटी निम्न के जरिये बढ़ाई जा सकती है—

1. आइडिया क्रिएटिविटी
   —बच्चों का नया खिलौना बनाने से
2. रिलेशनशिप क्रिएटिविटी
   —रिश्तों का महत्त्व समझा कर
3. स्पॉन्टेनियस क्रिएटिविटी
   —तत्काल उत्तर प्राप्त करने को बढ़ावा देकर
4. इवेंट एंड आर्गेनाइजेशनल क्रिएटिविटी
   —कोई आयोजन का सूत्र थमा कर। पार्टी या शादी में कार्यक्रम सौंप कर।
5. इन्टर क्रिएटिविटी
   —सुनामी भूकम्प के सहायतार्थ कार्य करना।
6. मटीरियल क्रिएटिविटी
   —हाथों से स्कूटर या साइकिल रिपेयर।

कोई भी परिणाम अन्तिम परिणाम नहीं होता।

—डा. राम बजाज

बच्चों को सिखाएँ कि असंभव कुछ भी नहीं है

1. कुछ संभावनाओं को इसलिए मत नकारो क्योंकि तुम्हें उनमें गड़बड़ लगती है।
2. कुछ संभावनाओं से इसलिए मत बचो क्योंकि तुम्हें उनका श्रेय नहीं मिलने वाला।
3. कुछ संभावनाओं को इसलिए मत नकारो क्योंकि तुम कुछ और तय कर चुके हो।
4. कुछ संभावनाओं से इसलिए इनकार मत करो क्योंकि तुम्हारे काम करने के अन्दाज में नयापन है।
5. कुछ संभावनाओं को इसलिए मत नकारो क्योंकि इससे नकारात्मक होने का डर है।
6. कुछ संभावनाओं को इसलिए मत नकारो क्योंकि तुम्हें नाकामयाब होने का डर है।
7. यह संभव नहीं है—कह कर किसी विचार को मत ठुकराओ।
8. किसी विचार (Idea) को इसलिए मत ठुकराओ क्योंकि तुम्हारे पास उसे पूरा करने के लिए पैसा और लोग नहीं है।
9. किसी भी विचार (Idea) को मत ठुकराओ क्योंकि अमीरी का मंत्र अमल से ही मिलता है।
10. कोई भी संभावना अंतिम नहीं होती।

शिक्षक की राय गलत थी Advise of teacher was wrong

बात सन् 1847 के करीब की है, जब पढ़ाई में अनुशासन अधिक होता था। चार साल के छोटे बच्चे की जेब में, उसके शिक्षक द्वारा लिखा गया संदेश जब उसकी माँ ने पढ़ा तो उसकी आँखों में आँसू आ गए। टीचर का संदेश था, आपका थामस इतना कमजोर और मूर्ख है कि वह आगे पढ़ नहीं सकता, उसे स्कूल से हटा लीजिए, नहीं तो स्कूल उसे निकाल देगी।

माँ ने आँसू पोंछते हुए लिखा, टीचर महोदय, मेरा थामस इतना

कमजोर तो नहीं, क्योंकि मैंने इसे अपने हाथों से पाला है, अगर आप नहीं पढ़ा सकते तो मैं इसे पढ़ाऊँगी। माँ ने जिस ढंग से उसको शिक्षा दी, वही थामस आगे चल कर थामस एडीसन बना और अपने नाम से एक हजार से अधिक पेटेन्ट रजिस्टर्ड करवाए। थामस एडीसन ने सिर्फ तीन महीने की ही स्कूली पढ़ाई की थी, बाकी शिक्षा उसने अपनी माँ से ली थी।

यह कैसे हुआ? उसकी माँ और स्वयं थामस एडीसन ने अपनी शिक्षा को हदों से आगे बढ़ कर सोचा। शिक्षा, प्रयोग और प्रयोगशाला हमें जहाँ एक ओर यह बताती है कि क्या किया जा सकता है, वहीं दूसरी ओर कई बार आकाश की बुलन्दियों को छुआ जा सकता है। व्यवहार, शिक्षा और काम के लिए माँ–बाप की जिम्मेदारी कबूल करनी चाहिए। सभी–कुछ अपनी औलादों के ऊपर नहीं छोड़ा जा सकता। उस स्टूडेंट की तरह न बनें जो सिर्फ इसलिए फेल हो जाता है कि उसे टीचर पसन्द नहीं था और माँ–बाप ने उस तरफ ध्यान ही नहीं दिया। सबसे ज्यादा नुकसान वह युवा किसको पहुँचाता है? हर माँ–बाप को अपनी जिम्मेदारी स्वीकारनी चाहिए तभी संभव होगा कि हमारे बच्चों के जीवन और अध्ययन के अंकों में सुधार हो।

बोर्डिंग स्कूल बेहतर विकल्प नहीं है

पापा–मम्मी की उँगली पकड़ जिन्दगी की डगर पर चलने वाले बेटे–बेटियों पर ताउम्र माँ–बाप का प्रभाव रहता है। परन्तु व्यस्तताओं के चलते आज के माँ–बाप द्वारा बच्चों को डे–बोर्डिंग अथवा बोर्डिंग स्कूल में भर्ती कराना बच्चों के लिए कोई कैद से कम नहीं होता। बोर्डिंग स्कूल को भले ही घर के माहौल का विकल्प मान लें, परन्तु बच्चों का भावनात्मक विकास सिर्फ घर में ही हो सकता है। चूँकि बोर्डिंग स्कूल के ज्यादातर बच्चों का ज्यादातर समय स्कूल में ही बीतता है। इसके चलते वे घर–परिवार से कटे–कटे रहने के अलावा माँ–बाप से भी खुल नहीं पाते। स्नेह की कमी से जुड़ाव और लगाव का कम होना कोई नई बात नहीं और एक समय ऐसा भी आ सकता है कि बच्चे डिप्रेशन के शिकार भी हो जाते हैं। स्नेह और लाड़–प्यार से वंचित और सुबह–शाम कठोर अनुशासन की कैद में रहने वाले इन बच्चों का व्यवहार आक्रामक हो जाता है। ऐसी हालत में कई बच्चे दूसरों का तो क्या अपने माँ–बाप का सम्मान करना

भी भूल जाते हैं। इसका सिर्फ एक ही कारण समझ में आता है और वह है पर्याप्त स्नेह की कमी। आगे जाकर ऐसे बच्चे आपराधिक प्रवृत्तियों में भी लिप्त हो जाते हैं। नशा, जुआ, शराब और अन्य कुप्रवृत्तियाँ इनमें घर कर जाती हैं। बोर्डिंग स्कूल में बच्चों का मन नहीं लगना, पापा–मम्मी को मिस करना, एक–सी पढ़ाई, खाने, पहनने और सोने के माहौल से जिन्दगी में नीरसता आ जाती है। उनकी दुनिया केवल वहीं पर सिमट कर रह जाती है। एक ही रुटीन हो जाता है। जरूरी नहीं है कि निर्धारित समय में वही करने का मन हो।

कहने का मतलब है कि बच्चों को जरूरत होती है माता–पिता के स्नेह व दुलार की। उनके स्नेहभरे सम्बन्ध की, जिससे अध्ययन की डगर को आसानी से पार कर सकें। परन्तु आधुनिक युग के माता–पिता का पूरी तरह बोर्डिंग स्कूल पर निर्भर रह जाना बच्चों के स्वाभाविक विकास को बाधित कर रहा है। यह विशेष रूप से अभिभावकों के समझने की बात है।

उच्च शिक्षा और विदेश का भूत

आधुनिक स्वतंत्र युग में हम दो, हमारे दो के नारे के साथ जीने वाले इनसान, जिसके एक ही बच्चा हो, विदेशों में भेज कर उच्च शिक्षा की व्यवस्था करते हैं, जो सिर्फ थोथी ही साबित होगी। भारी विडम्बना है कि आखिर हम क्या हासिल करने जा रहे हैं? 25 साल की उम्र तक बच्चा पढ़ता रहेगा और फिर इसके बाद अपना भविष्य संवारने के लिए कहीं सफल व्यापार अथवा ऊँची नौकरी के लिए फिर से माँ–बाप का साथ छोड़ना पड़ेगा। फिर ऐसी व्यवस्था करने की आपने ठान ही ली तो आपको क्या मिला? सोचने वाली बात यह है कि जिन सीढ़ियों पर चढ़ कर हम बुलन्दियों तक आ गए—वहाँ क्या इतनी अधिक ऊँचाई है कि हमें पहली सीढ़ी बहुत धुंधली दिखने लगी है या फिर दिखती ही नहीं? क्या हमारी परवरिश में कोई कमी रह गई थी? क्या हमने अपने स्तर पर अमीरी के रास्ते नहीं तलाश किए? फिर हमारा बच्चा क्या और ज्यादा अमीरी के रास्ते तलाशेगा? कहीं दूर गगन की छाँव में भटक कर विदेशों में अपना सब–कुछ गंवा दे, ऐसी व्यवस्था हमें क्यों करनी है? हमें अपने धन–साधन यहीं से बटोरने की ही कला सिखानी होगी। आज का इनसान स्वयं अपनी जड़ों (बच्चों) से दूर रह कर अपने दिखावे व झूठे वादों को निभाने में जान–बूझकर असफल रहता है, शायद यह हमारी परम्परा बन गई है। क्या आपको पता नहीं है कि आधुनिक युग के रंग में रंगी नई पीढ़ी

पुरानी तहजीब, मर्यादा, संस्कार जैसी बातें भूल गई है? बड़े लोग वो होते हैं जो जहाँ बैठ जाते हैं वही जगह बड़ी बना देते हैं। एक बात आप गाँठ बाँध लीजिए कि सच बहुत दिनों तक छिपता नहीं और झूठ बहुत दिन तक दबता नहीं। बच्चों की शिक्षा की सम्पूर्णता, जीवन के उद्देश्य को समझने और उसे पूरा कर लेने की योजना बना लेने में है। मुनाफा कमाने के लिए आपके बच्चे को कोई निमंत्रण नहीं देगा, बल्कि उसका निमन्त्रण अपने-आप से लेना है। विदेशों में उच्च शिक्षा से तो वह कभी नहीं मिल सकता। और अगर मिल भी सकता है तो अपने देश की उच्च शिक्षा क्या कम है! जिसने डा. ए.पी.जे अब्बदुल कलाम जैसे वैज्ञानिक और राष्ट्रपति प्रदान किए हैं!

हर माता-पिता की ख्वाहिश होती है कि उनका बच्चा अनुशासित हो, लेकिन यह कोई ऐसी चीज नहीं है जो विदेशों से खरीदी जा सकती है। अगर आपके बच्चे ने एक कदम पहले उठाने की शिक्षा ले ली है तो यह उसके जानने के लिए कोई कम नहीं कि दूसरों ने यह कदम कब उठाया था। आज के प्रबन्धन तथा समय-प्रबन्धन को सहज बना देने वाली व्यापार हाइटेक शैली ने नवयुवकों के सामने व्यापार के सुनहरे अवसरों का दरवाजा खोल दिया है, भले ही शहर के पास एक छोटा-सा गाँव ही क्यों ना हो। सुविधा के लिए चाहिए टेलीफोन, बिजली और सम्पूर्ण कम्प्यूटर प्रणाली की व्यवस्था। आसमान छूने की तमन्ना इसी गाँव की जमीन पर पूरी हो सकती है—अगर आपके इरादे मजबूत हों तो।

भारतीय संस्कृति और शास्त्रों से पता चलता है कि जो इनसान जय और पराजय को हजम कर ले, जो व्यक्ति रूप, धन और यश को पचा ले, वही व्यक्ति महान् होता है। और आप उन में से एक हो सकते हैं।

देशी शिक्षा और हमारे टीचर से उम्मीदें—मम्मी-डैडी का खत—टीचर के नाम

प्रिय स्कूल टीचर,

आज मेरे बेटे का स्कूल में पहला दिन है, यह पल और दिनों से बिल्कुल अद्‌भुत और नया है। हमें उम्मीद है कि आप उसके साथ अच्छा ही नहीं, बहुत अच्छा व्यवहार करेंगी।

आपको बताने और समझाने की भी जरूरत नहीं है कि अब तक वह घर का बादशाह था। उसकी हर भावना को समझने और उसकी हर

तकलीफ को जानने व दूर करने के लिए हम दोनों हमेशा उत्सुक व तत्पर रहते थे।

परन्तु आज की सुबह उसके लिए नई है। यह सुबह उसके जीवन में नया रोमाँच और उत्साह लायेगी और शायद साथ ही लाएगी थोड़ा गम हमसे बिछुड़ने का और कुछ स्कूली वातावरण के साथ जुड़ने के मधुर क्षण। इस नई दुनिया में रहना सीखने व पढ़ने के लिए उसे ज्यादा प्यार और हिम्मत की जरूरत पड़ेगी, जिसे आप पूरा करेंगी।

हमें उम्मीद है कि आप उसे उसके बचपन के साथ स्वीकार करेंगी और जीवन में आगे बढ़ने के लिए सही–गलत का फर्क भी सिखाएँगी। साथ में सिखाएँगी कि बचपन के दिनों में सुदृढ़ नींव का निर्माण व किताबों के बोझ को कम करने के नुस्खे।

आप उसे सिखाएँगी कि हर सफलता के पीछे, कई असफलताओं को झेलना, हर महान हीरो (Hero) के पीछे एक अनुभवी इनसान का होना, हर मुसीबत के पीछे एक अच्छे दोस्त का साथ होना। उसे अच्छी किताबों की अद्‌भुत दुनिया का हिस्सा भी आप ही बनाएँगी।

हमें उम्मीद है कि आप भरपूर समय देंगी ताकि वह आसमान में उड़ते बादल, चहकती हुई चिड़ियों, खिलते हुए फूलों, सोने की धरती और असली अमीरी का रहस्य भी समझ सके। उसे बतलाएँ कि नकल करने से अच्छा है फेल हो जाना, झूठ बोलने से अच्छा है नहीं बोलना, बोलना ही पड़े तो हमेशा सिर्फ सच बोलना। दूसरों पर भरोसा करने की बजाय खुद पर भरोसा करना ही सिखाएँगी।

उसे बताएँ कि वह दुनिया में अपने दिमाग की अहमियत जाने, अक्ल को इस्तेमाल करना सीखे, सिर्फ आइडिया (सपनों) से काम नहीं चलता, उसके साथ दिमाग को भी जोड़े और मेहनत के साथ ईमानदारी से परिश्रम करना सिखाएँ।

उसे सिखाएँ कि गलत बातों को सुनने से पहले कान बन्द कर ले और सही समझना है तो आपसी राय लेनी सीखे। उसे हिम्मत से आगे बढ़ने के रास्ते दिखलाएँ, लेकिन चीजें उस पर थोपें नहीं। उसे अपनी दिमागी शक्ति का स्वयं दोहन करने की कला सिखलाएँ।

लेकिन हम जानते हैं कि ये बहुत बड़ी बातें और फरमाइशें हैं, फिर भी देखें कि आप इस नन्हे बच्चे के लिए क्या कर सकती हैं।

क्या आप इसको ईमानदारी का पहला पाठ पढ़ना सिखा सकेंगी?

क्या आप नैतिकता की शिक्षा दे सकेंगी?

क्या आप इसे दूसरों की मदद का एहसास करा देंगी?

क्या आप इसे अमीर बनने के नुस्खे सिखला सकेंगी? परन्तु साथ में दिल और आत्मा को कभी भी धन से न तौलने का गुर भी आप ही सिखलाएँगी।

याद रहे, इनमें से एक भी पाठ की अच्छी शिक्षा—उसके जीवन में हमेशा प्रेरणा भर देगी और उसको शिक्षा की नई ऊँचाइयों पर पहुँचा देगी।

आदर सहित।

सद्भावना के साथ चरण स्पर्श।

नन्हे बच्चे के

मम्मी–डैडी

परन्तु आज का शिक्षक हाइटेक हो गया है। शिक्षा भिक्षाटन के जरिये नहीं दी जा रही है और गुरु सिर्फ दक्षिणा के लिए ज्ञान नहीं बाँट रहे हैं। गुरु–शिष्य के सम्बन्ध भी बदल गए हैं, क्योंकि शिक्षा का माध्यम बदल गया है और सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि शिक्षा का उद्देश्य बदल गया है। दरअसल इस बदले उद्देश्य की वजह से भी सारी चीजें बदली हैं। फिर भी टीनएजर आज बाजी मार चुके हैं। उनकी बेहतर प्लानिंग की वजह से ही आज युवाओं ने कामयाबी की उन ऊँचाइयों को छुआ है जिनके बारे में सिर्फ कल्पना ही की जाती थी। आप अगर बैकग्राउंड में झाँक कर देखें तो ऐसे तमाम युवाओं के पीछे किसी–न–किसी माँ–बाप के मार्गदर्शन से ही यह संभव हुआ है। जब कभी भारतीय अध्ययन के इतिहास में बच्चों की कामयाबी की जड़ें तलाश करने की कोशिश की जाएगी तब नतीजा माँ–बाप के नाम की शक्ल में ही सामने आयेगा। अच्छे कलाकार के साथ अच्छे इनसान सिर्फ माँ–बाप ही होते हैं। अधिकतम अंकों की प्राप्ति में माँ–बाप का योगदान ही उसको उन ऊँचाइयों तक पहुँचाने में मदद करता है। क्योंकि वही और सिर्फ वही जानता है कि बच्चे का कोई भी कदम आखिरी कदम नहीं होता।